Madhulika (Hindi Pathyapustak) Class - 6

6 हिंदी (मधुलिका)

1. प्रकृति की शोभा

मौखिक

(क) जग की सुंदरता को।
(ख) भँवरों की गूँज से।
(ग) समुद्र में जो अंतहीन जल है उससे सीमाहीन बादल जन्मे हैं।
(घ) अद्‌भुत और अपरंपार।

लिखित

1. (क) पर्वत की चोटियाँ मन को भाने वाली हैं। वहाँ से निर्मल जल के विशाल झरने झरते हैं।
   (ख) रात को चाँद और तारे निकलते हैं जिनसे रात का बदन सज जाता है।
   (ग) कवि ने बादलों की विशेषता बताई है–बादलों का गरजना, बिजली की कड़कना और उनसे वर्षा होना।
2. प्रकृति की सुंदरता अनंत है। कहीं पेड़-पौधे-लताएँ और फूल हैं, तो कहीं भाँति-भाँति के पक्षी। नदियाँ, झील, सरोवर इसकी सुंदरता को चार चाँद लगाते हैं। पर्वतों की चोटियाँ, विशाल झरने मन को हर लेते हैं। समय-समय पर अलग-अलग ऋतुएँ आती हैं, अलग-अलग प्रकार की फ़सलें होती हैं। सूर्य-चंद्रमा-तारे आकाश की शोभा बढ़ाते हैं। बादल गरज-गरजकर वर्षा करते हैं। प्रकृति के रूप में ही परमात्मा की लीला नज़र आती हैं।
3. (क) (*ii*), (ख) (*iii*)
4. (क) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने वर्षा ऋतु का सुंदर वर्णन किया है। तब बादल गरजते हुए आते हैं। उनसे बिजली कड़कती है और वर्षा होती है।
   (ख) हम धरती पर प्रकृति के विभिन्न रूप देखते हैं। कवि कहते हैं कि प्रकृति के इन रूपों से ही हमें परमात्मा के अनूठे कृत्यों का पता चलता है।
5. विभिन्न कारणों से ईश्वर के कार्यों को चतुराई-भरा कहा जा सकता है। परमात्मा दुख देता है तो सुख भी देता है। दुख-सुख को सहन करने की शक्ति भी देता है। तेज़ धूप देता है तो वर्षा भी देता है। गरमी बरसाता है तो ठंडक भी लाता है। शरीर को भूख देता है तो उसे शांत करने के लिए विभिन्न खाद्यान्न, फल-सब्ज़ियाँ भी देता है। इस प्रकार परमात्मा के सब कार्य चतुराई भरे हैं।

भाषा-बोध

1. (*i*) ध्य–अध्यापक, अध्याय; (*ii*) श्व–नश्वर, पाश्विक; (*iii*) म्य–साम्य, म्यान; (*iv*) स्त–पास्ता, रास्ता; (*v*) स्प–चस्पा, इस्पात
2. वन – व् + अ + न् + अ
   लता – ल् + अ + त् + आ
   झील – झ् + ई + ल् + अ
   शोभा – श् + ओ + भ् + आ
   रजनी – र् + अ + ज् + अ + न् + ई
3. 1. ऊँचे–ऊँचे, 2. कहीं–कहीं, 3. सुंदर–सुंदर, 4. काले–काले, 5. मीठी–मीठी, 6. उजली–उजली
4. गूँजना–गूँज, मानवं–मानवता, दौड़ना–दौड़, मूर्ख–मूर्खता, खेलना–खेल, मित्र–मित्रता
5. (*i*) मधुमय, (*ii*) कांतिमय, (*iii*) शांतिमय, (*iv*) रसमय

रचनात्मक कार्य

कार्य-कलाप पूर्ण करने में बच्चों को प्रेरित करें तथा मार्ग-दर्शन करें।

2. नमक का दारोगा

मौखिक

(क) क्योंकि नमक-विभाग में छल-प्रपंच, घूसखोरी और चालाकी से अधिक धन कमाया जा सकता था।
(ख) वंशीधर के पिता ने उनको घर की परिस्थिति से अवगत कराया और ऊपर की कमाई की तरफ ओहदे से ज़्यादा ध्यान देने को कहा।
(ग) जब पंडित अलोपीदीन हाथों में हथकड़ियाँ पहनें, दिल में पश्चाताप लिए और शर्म से गर्दन झुकाकर अदालत की तरफ चले तो सारे शहर में हलचल मच गई।
(घ) क्योंकि सभी लोगों को यह लगा कि पंडित अलोपीदीन बेकसूर हैं और वंशीधर कसूरवार।
(ङ) वंशीधर समझे कोई राजा-महाराजा आया है।

लिखित

1. (क) पंडित अलोपीदीन उस इलाके के सबसे प्रतिष्ठित ज़मीदार थे।
   (ख) लोग यह सोचकर हैरान हो रहे थे कि पंडित अलोपीदीन जैसा व्यक्ति पकड़ में कैसे आ गया।
   (ग) वंशीधर को नौकरी से अस्थायी रूप से हटा दिया गया।

(घ) उनकी नज़र में वंशीधर कर्तव्यपरायण और ईमानदार थे।

2. (क) सबसे पहले तो पंडित अलोपीदीन ने वंशीधर की चापलूसी की तथा उसे रिश्वत देने की कोशिश की। वंशीधर ने कड़ककर जवाब दिया कि वह हरगिज़ रिश्वत नहीं लेगा। इस पर पंडित जी रिश्वत का भाव बढ़ाने लगे। उन्होंने अपनी इज़्ज़त का वास्ता भी दिया और चालीस हज़ार रूपए की रिश्वत देने की पेशकश की लेकिन वंशीधर उनकी बात सुनने-मानने को किसी कीमत पर तैयार न हुआ और पंडित जी को हिरासत में ले लिया।

(ख) डिप्टी मजिस्ट्रेट ने अपने निर्णय में लिखा कि पंडित अलोपीदीन के विरुद्ध दिए गए प्रमाण आधारहीन और भ्रम पैदा करने वाले हैं। उन्होंने यह भी लिखा कि यह स्थिति वंशीधर की विचार-हीनता से पैदा हुई है। उसके कारण एक भले व्यक्ति को कष्ट उठाना पड़ा है।

3. (क) (*ii*), (ख) (*ii*)

4. (क) इस पंक्ति में धन की महिमा बताई गई है। इस कथन के अनुसार धन में बहुत शक्ति है। धन से सिद्धांत बदल जाते हैं, विचार बदल जाते हैं। धन के कारण न्याय का स्थान अन्याय ले लेता है। धन से कुछ भी किया जा सकता है।

(ख) इस कथन का आशय है चर्चा होना। 'दुनिया सोती थी' का अर्थ है कि लोग असली कारण जानने के उत्सुक न थे। 'जीभ जागना' का अर्थ होता है चर्चा करना अर्थात लोग इस कांड की चर्चा चटखारे ले लेकर कर रहे थे। जब पंडित अलोपीदीन गिरफ़्तार हो गए तब पूरे शहर में इस कांड की खूब चर्चा हुई।

5. पंडित अलोपीदीन अनुभवी व्यक्ति थे। उनकी नज़रों ने परख लिया था कि वंशीधर पूरा ईमानदार और कर्तव्यपरायण युवक था। उसने उनके द्वारा पेश भारी-भरकम रिश्वत को ठुकरा दिया था। उन्हें ज़रूर अपनी जायदाद के लिए ऐसे ही ईमानदार युवक की तलाश थी। इसीलिए उन्होंने वंशीधर को अपनी जायदाद का स्थायी मैनेजर रखा होगा।

भाषा-बोध

1. फूला न समाना– बहुत प्रसन्न होना
सिर-माथे पर होना– पूरा सम्मान देना
पौ बारह होना– खूब मज़े होना
लल्लो-चप्पो करना– चापलूसी करना
मिट्टी में मिल जाना– पूरी तरह समाप्त हो जाना

2. (*i*) प्रतिष्ठा + इत, (*ii*) व्यथा + इत, (*iii*) मोह + इत, (*iv*) स्तंभ + इत, (*v*) संकुचन + इत, (*vi*) भ्रम + इत

3. (*i*) अकारथ, (*ii*) अविनय, (*iii*) असंभव, (*iv*) असह्य, (*v*) अकंपित, (*vi*) अकथनीय

4. (*i*) नमक, (*ii*) खोज, (*iii*) दारोगा, (*iv*) आचरण, (*v*) उत्तर, (*vi*) कर्तव्य

5. (*i*) वृद्धा, (*ii*) पंडिताइन, (*iii*) नौकरानी, (*iv*) सेविका, (*v*) सिंहनी

6. केवल समझाने हेतु

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** विभिन्न प्रकार के भ्रष्टाचार, कर्मचारियों का काम न करना, अपना काम दूसरों से करवाना, दूसरों का हक छीनना आदि। भ्रष्टाचार करने वालों को सख्त सज़ा मिलनी चाहिए। इससे दूसरों की भी आँखें खुलेंगी।

2. **संकेत :** अच्छे आचरण वाले को सब चाहते हैं, वह लोकप्रिय हो जाता है, सबका सहयोग मिलता है, उन्नति के रास्ते खुलते हैं।

3. **संकेत :** न्याय चाहने वाले की तरफ़ से मुकदमा किया जाता है, अदालत प्रमाण माँगती है, बहस होती है। तब मुकदमे का फ़ैसला होता है। अदालत में फ़ैसले प्रमाण के आधार पर, वकील अपने मुवक्किल (मुकदमा लड़ने वाला व्यक्ति) की ओर से दलील (तर्क) प्रस्तुत करते हैं, कानूनों की जानकारी देते हैं।

4. एवं 5. के लिए बच्चों का उत्साहवर्धन करें।

3. आत्मबल

मौखिक

(क) सामने वाले की आधी ताकत अपने में खींच लेने की शक्ति का जो वरदान बाली को प्राप्त था, वह हम सबको भी प्राप्त है।

(ख) अपनी आत्महीनता, कायरता, कुसंस्कार और आत्मविश्वास की कमी से हम अपने विरोधी को अपने से अधिक शक्तिशाली मान लेते हैं।

(ग) बच्चों से कहानी दोहराने को कहें।

(घ) जब हम कोई भी कार्य आत्मविश्वास से करेंगे और सफल होंगे।

(ङ) जो कूड़ाघरों से पास कुरसी बिछाकर बैठ जाते हैं और शहर की गंदगी को गाली देते हैं अर्थात जो कायर और डरपोक हैं, जिनमें आत्मविश्वास ही नहीं है कोई भी कार्य पूर्ण करने का।

लिखित

1. (क) बाली को यह वरदान प्राप्त था कि वह सामने (लड़ने) वाले की आधी ताकत अपने में खींच लेता था।
   (ख) हम इसलिए पिटते रहे हैं क्योंकि हम अपना पिटना अनिवार्य समझते रहे हैं।
   (ग) हम अपने आत्मविश्वास से अपने विरोधी को आत्महीन कर सकते हैं।
   (घ) दुविधा एकाग्रता को नष्ट कर देती हैं।
   (ङ) लेखक ने भय, शंका, अधैर्य आदि अवगुणों की तुलना डायनामाइट से की है।
   (च) यह सोच-सोचकर कि हमें कभी सफलता नहीं मिलेगी, हमारी किस्मत खराब है।

2. (क) निश्चित तौर पर नेता जी में अटूट आत्मविश्वास था। एक बार एक परीक्षक ने उनसे बड़ा अजीब-सा प्रश्न पूछा। उसने पूछा कि क्या किसी अँगूठी में से उन्हें (नेता जी को) पास किया जा सकता है। कोई आम व्यक्ति इस प्रश्न पर भ्रम में पड़ जाता लेकिन नेताजी ने अपने नाम का विज़िटिंग कार्ड मोड़कर उस अँगूठी में से पास करवा दिया। यह अटूट आत्मविश्वास का ही प्रतीक था।
   (ख) नीति-वचन यह कहता है कि जहाँ अपनी, अपने कुल की और अपने देश की निंदा हो और उसका मुँह तोड़ उत्तर देना संभव न हो, वहाँ से उठ जाना चाहिए क्योंकि इससे आत्म गौरव तथा आत्मविश्वास घट सकता है।
   अनुभव वाणी के अनुसार–प्रत्येक मनुष्य यह माने कि उसके लिए सब अच्छा ही होगा। वह जो भी कार्य हाथ में लेगा उसमें उसे सफलता मिलेगी।
   (ग) हेलेन केलर जन्म से अंधी-बहरी बच्ची थी लेकिन व सुप्रसिद्ध विचारक और लेखिका बनी। उसकी सूक्ति से हम यह शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं कि हमें जीवन में कभी आशा का दामन नहीं छोड़ना चाहिए।

3. (क) (*i*), (ख) (*iv*), (ग) (*i*), (घ) (*iv*)

4. (क) जब हमारे मन में अविचल श्रद्धा होती है तो हम पूरी लगन, श्रद्धा और आत्मविश्वास से अपने कार्य में जुट जाते हैं। और जो काम पूरी लगन, श्रद्धा और आत्मविश्वास से किया उसके न होने का कोई कारण ही नहीं बचता। जब सब कार्य पूर्ण होते जाएँ तो सफलता मिलती चली जाती है और उन्नति होती चली जाती है।
   (ख) इन पंक्तियों में दो प्रकार के लोगों का वर्णन है– (*i*) दुविधा में रहने वाले; (*ii*) निर्णय करके तुरंत कार्य में जुट जाने वाले। जो लोग दुविधा में पड़े रहते हैं, वे केवल सोचते रह जाते हैं कि क्या करूँ और क्या नहीं। वे कभी सफल नहीं होते। जो लोग तुरंत निर्णय करके साहस से कार्य में लग जाते हैं, वे सफलता के शिखर पर पहुँच जाते हैं।

5. हतोत्साहियों, निराशावादियों, डरपोकों की संगत के बहुत बुरे परिणाम सामने आते हैं। ऐसे लोगों की संगत में रहने वाला व्यक्ति खुद भी उन जैसा बन जाता है। उसे किसी कार्य में आनंद नहीं आता। असफलता का विचार उसके मन में गहरे बैठ जाता है। उसे लगता ही नहीं कि वह भी सफल हो सकता है।

भाषा-बोध

1. (ख) उसकी, (ग) उसे, (घ) वे
2. (क) को, (ख) को, (ग) के, (घ) की, (ङ) का
3. (ख) कि इससे लकड़ी भी काटी जा सकती है।
   (ग) कि पेड़ से पतंग उतारी जा सकती है।
   (घ) कि कुरता-पाजामा बन ही नहीं सकता।
4. (*i*) सूर्य + उदय, (*ii*) भाग्य + उदय, (*iii*) पर + उपकार, (*iv*) पूर्व + उदय, (*v*) नव + उदय
5. पीटना–पिटना, देखना–दिखना, मारना–मरना, सुनाना–सुनना, भगाना–भागना, तौलना–तुलना

रचनात्मक कार्य

1. लाल बहादुर शास्त्री, सरदार पटेल, चंद्रशेखर आज़ाद, सरदार भगत सिंह, मुंशी प्रेमचंद, अन्ना हज़ारे, भीमराव अंबेडकर आदि

2. **अमिताभ बच्चन : संकेत :** युवावस्था में अभिनय का शौक, अच्छे वेतन वाली नौकरी छोड़कर अभिनय जगत में प्रवेश किया, शुरुआत में कोई सफलता नहीं मिली, लोगों ने ताने मारे, कुछ ने इनकी तुलना लाठी से की, हिम्मत नहीं हारी, संघर्ष किया, सफलता प्राप्त की, सफलता भी ऐसे जैसी इनसे पहले शायद ही किसी ने प्राप्त की हो, बुढ़ापे में भी सक्रिय।

   सुधा रामचंद्रन : संकेत : भारत की सुप्रसिद्ध नृत्यांगना, एक दुर्घटना में एक टाँग खोई, हिम्मत नहीं हारी, जयपुर से नकली टाँग लगवाई, अभ्यास किया, संघर्ष किया, नकली टाँग होते हुए भी फिर से शानदार नृत्य किया, देश-विदेश में नृत्य के कार्यक्रम आयोजित किए, अपना और देश का नाम रोशन किया।

   ए.पी.जे. अब्दुल कलाम : संकेत : गरीब परिवार में

जन्म लिया, जीवन-निर्वाह हेतु बचपन में अखबार तक बाँटीं, लगन से पढ़ाई की, वैज्ञानिक बने, भारत के लिए अनेक मिसाइलें बनाईं, 'मिसाइल मैन' कहलाए, 'भारत-रत्न' पुरस्कार पाया, भारत के राष्ट्रपति पद को सुशोभित किया।

3. **संकेत :** कोचवान (रथ चलाने वाला) की भूमिका, अर्जुन के कोचवान बने, अर्जुन जब निराश हो गया तब उसका हौंसला बढ़ाया, महाभारत के दौरान ही अर्जुन को गीता का ज्ञान दिया।

4. बच्चों को कुछ समय ध्यान करने के लिए प्रेरित करें। कक्षा में भी पढ़ाने से पहले 1-2 मिनट आँखें बंद करके मौन बैठने को कहा जा सकता है।

5.6.7. क्रिया-कलाप हेतु बच्चों को प्रेरित करें।

4. बकरी का साहस्

मौखिक

(क) बकरियों ने मौत से बचने के लिए बाड़े में कैद रहकर जुगाली करते रहना ही श्रेष्ठ समझा।
(ख) बकरी से मात खाने का।
(ग) क्योंकि उन्हें लगता था कि भेड़िये के मुँह उनका खून लग चुका है। वह तो एक न एक दिन उन्हें खाकर रहेगा। वे अपने आप को भेड़िये से निर्बल समझती थीं।
(घ) अपने अहं की वजह से कि दुनिया क्या कहेगी कि एक बकरी से हार गया।

लिखित

1. (क) एक युवा नई बकरी को।
(ख) भय से अपनी गरदन छुपा लेता है।
(ग) भेड़िये की बकवास सुनने का।
(घ) अपने साथियों के निकम्मेपन पर।
(ङ) चरवाहे ने पहाड़ पर बकरियाँ चराना बंद कर दिया।
(च) पर्वत पर युवा बकरी दिनभर आज़ाद घूमती, कूदती, फलाँगती चरती रही।
(छ) भेड़िये ने बकरी के सामने पर्वत की सैर करने का प्रस्ताव रखा।
(ज) तोता बकरी का मज़ाक उड़ाना चाहता था लेकिन मैना ने बकरी के कर्म को उचित ठहराया।

2. (क) बकरी के अरमान थे कि वह भेड़िये के मुँह में लगे खून को देखे। भेड़िये के झपटने की कला देखें। उसके करतब देखें। उसके दाँव-पेंच देखें।
(ख) सर्वप्रथम बकरी ने भेड़िये को ज़ोरदार टक्कर मारी। भेड़िया गार में गिरने से बाल-बाल बचा। अभी वह सँभल भी न पाया था कि बकरी ने अपने पैने सींग उसकी छाती में गड़ा दिए। भेड़िया उस पर झपटा तो वह एक ओर हट गई और भेड़िये की सिर पेड़ से टकराकर लहूलुहान हो गया लेकिन इसके बाद भेड़िया अपनी पूरी ताकत से बकरी पर टूट पड़ा और उसे मार डाला।
(ग) युवा बकरी का चरित्र हमें प्रेरणा दे जाता है कि हमें अत्याचारी का साहस से मुकाबला करना चाहिए। हो सकता है कि अत्याचारी हमसे बहुत अधिक शक्तिशाली हो, हो सकता है कि हमारे प्राण चले जाएँ लेकिन अत्याचारी का विरोध डटकर करना चाहिए। इससे आने वाली पीढ़ियों का भला होगा।

3. (क) भोग्य का अर्थ होता है–भोगा जाने वाला लेकिन इस अर्थ का प्रयोग सदा कमज़ोर व्यक्ति ही किया करते हैं। जो सोचते हैं कि वे कुछ नहीं कर सकते। उनकी किस्मत ही ऐसी है परंतु साहसी व्यक्ति अपना हक पाने के लिए उठ खड़े होते हैं।
(ख) इस पंक्ति का अर्थ है कि व्यक्ति को हर परिस्थिति का सामना करना चाहिए। यदि खतरे के समय कोई छुपकर बैठ जाए तो खतरा कम नहीं हो जाता। हर खतरे का, हर विपरीत स्थिति का डटकर साहस से मुकाबला करना चाहिए।
(ग) इसमें कोई शक नहीं कि भेड़िये का मुकाबला करने में बकरी की जान चली गई। आमतौर पर शुरू में अत्याचारी की ही जीत होती है लेकिन अंत में सच्चा व्यक्ति जीतता है। विरोध करने वाले को कई प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं लेकिन उसके कार्यों से आने वाली पीढ़ियाँ चैन से जी सकती हैं।

4. (क) **संकेत :** बहकाने की बात सोची होगी, सोचा होगा कि घूमते-घामते जब मौका मिलेगा, मारकर खा जाऊँगा, प्रस्ताव मानने पर भेड़िया बकरी को अपने इशारों पर नचाता, बकरी तो मरती ही लेकिन भेड़ियो को कोई दुख-पीड़ा न होती।
(ख) उसके मुसकराने से पता चलता है कि वह बकरी का मज़ाक उड़ाना चाह रहा है। उसकी नज़र में बकरी का भेड़िये से टकराना मूर्खता थी। इससे पता चलता है कि तोता कायर और दूसरों का मज़ाक उड़ाने वाला था। ऐसे प्राणी या लोग खुद तो किसी अत्याचार का विरोध करते ही नहीं, जो करते भी हैं, उनका मज़ाक उड़ाते हैं।

भाषा-बोध

1. (*i*) किंकर्तव्यविमूढ़, (*ii*) अकर्मण्यता, (*iii*) दरख्त, (*iv*) शुतुरमुर्ग, (*v*) भेड़िया, (*vi*) लहूलुहान

2. (क) (*i*) अकर्मण्यता, (*ii*) उत्सुकता, (*iii*) दरिद्रता, (*iv*) बचपन, (*v*) अकेलापन, (*vi*) सीधापन
   (ख) (*i*) रोगी, (*ii*) पापी, (*iii*) मेहनती, (*iv*) ज़ुल्मी, (*v*) कुदरती, (*vi*) भोगी

3. (*i*) तुम अपनी शरारतों से बाज़ आ जाओ वरना सख्त सज़ा मिलेगी।
   (*ii*) भारतीय सेना के सामने शत्रु सेना के पाँव उखड़ गए।
   (*iii*) भूखे कुत्ते को जैसे ही हड्डी नज़र आई, वह उस पर टूट पड़ा।
   (*iv*) अक्षय का झूठ व चोरी पकड़ी गई तो वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।

4. (क) पर, (ख) ने, (ग) से, (घ) के लिए, (ङ) में

5.

	विशेषण	विशेष्य		विशेषण	विशेष्य
(क)	युवा	बकरी	(ख)	हसरत-भरी	नज़रों
(ग)	मनमानी	कुलेलें	(घ)	भारी	पत्थर
(ङ)	पहला	अवसर			

6. धूर्तता– छल, हसरत– चाह, स्वच्छंद– मुक्त, निंरीह– निर्बल, भोग्य– भोगने योग्य

रचनात्मक कार्य

1. बच्चों को घटना सुनाने हेतु प्रेरित करें।

2. **संकेत :** अपने देश को आज़ाद कराने हेतु अत्यधिक शक्तिशाली शासन से मुकाबला किया, जेलों में गए, फाँसी का फंदा चूमा, प्राणों की बाज़ी लगा दी।

3.4.5.हेतु बच्चों का मार्ग-दर्शन करें।

5. नर हो न निराश करो मन को

मौखिक

(क) काम करने से तन स्वस्थ रहेगा, आत्मविश्वास बढ़ेगा और मन में निराशा का वास नहीं होगा।
(ख) समय का सदुपयोग करना।
(ग) कवि हमें संसार रूपी जंगल में आत्मविश्वास और निर्भयता से भरपूर जीवन जीने की प्रेरणा दे रहे हैं।
(घ) कवि कहना चाहते हैं कि जीते जी हमें ऐसे कर्म करने चाहिए कि मरने के बाद भी यह दुनिया हमें याद करे।

लिखित

1. (क) कवि हमें जग में रहकर काम करने को कह रहे हैं।
   (ख) कवि तन (स्वास्थ्य) को सही करने को कह रहे हैं।
   (ग) कवि ने अपनेपन की तुलना अमृत से की है।
   (घ) हमारा यश हमारी मृत्यु के बाद भी बना रहना चाहिए।

2. (क) कवि के अनुसार परमात्मा की बनाई सब चीज़ें हमारे चारों ओर मौजूद हैं। उनका संकेत पूरी प्रकृति (सूरज, चाँद, सितारे, वायु, पर्वत, समुद्र आदि) की ओर है। जब उसकी बनाई चीज़ें हमारे चारों ओर मौजूद हैं तो परमात्मा हमसे दूर कहाँ जा सकता है।
   (ख) इस कविता का केंद्रीय भाव अति सरल एवं स्पष्ट है।
   कविता हमें कर्म करने, समय का सदुपयोग करने, स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा देती है। यह कविता हमें परमात्मा में विश्वास रखते हुए यश पाने हेतु प्रेरित करती है।

3. 1. (*iv*), 2. (*iii*), 3. (*ii*), 4. (*i*)

4. **संकेत :** आत्म-सम्मान न हो तो व्यक्ति का जीवन पशुओं से भी बदतर हो जाता है। जिस व्यक्ति में आत्म-सम्मान नहीं होता उसका जीना या न जीना कोई महत्त्व नहीं रखता। न कोई उसकी परवाह करता है, न उसके विचारों की इसलिए कवि ने ठीक ही कहा है–भले ही सब चला जाए लेकिन आत्म-सम्मान कभी नहीं खोना चाहिए।

भाषा-बोध

1. (*i*) कुछ काम करो कुछ काम करो
   (*ii*) नर हो न निराश करो मन को

2. (*i*) मरण + उत्तर, (*ii*) पूर्व + उत्तर, (*iii*) हित + उपदेश, (*iv*) चंद्र + उदय

3. (*i*) सुपुत्र, (*ii*) सुअवसर, (*iii*) सुलभ, (*iv*) सुडौल, (*v*) सुदूर, (*vi*) सुविकसित

4. (*i*) जन्म, (*ii*) व्यर्थ, (*iii*) उपयुक्त, (*iv*) प्रशस्त, (*v*) प्राप्त, (*vi*) तत्व

5. विष × सुधा, कुयोग × सुयोग, मृत्यु × जन्म, अपमान × मान, अनुपयुक्त × उपयुक्त, अनर्थ × अर्थ

रचनात्मक कार्य

3. **संकेत :** स्वस्थ शरीर के बिना कोई कार्य संभव नहीं, समाज व्यक्तियों से ही बनता है, शरीर स्वस्थ होगा तभी व्यक्ति को समर्थ माना जाता है, सब स्वस्थ होंगे तो स्वस्थ समाज का निर्माण होगा।
   शेष बिंदुओं हेतु बच्चों का मार्ग-दर्शन करें।

6. पेड़ की कहानी

मौखिक

(क) दो सुकोमल पत्तियों के बीच अंकुर बाहर निकला। अंकुर का एक अंश नीचे माटी में मज़बूती से गड़ गया और दूसरा अंश माटी भेदकर ऊपर की ओर उठा।

(ख) पेड़-पौधों में जड़ हमेशा नीचे की ओर जाएगी व तना ऊपर की ओर उठेगा।

(ग) लेखक ने विधाता की करुणा का चमत्कार पेड़-पौधों को कहा है क्योंकि वे कार्बन-डाइऑक्साइड लेकर ऑक्सीजन छोड़ते हैं। जो जीव-जंतुओं के जीवन के लिए ज़रूरी है।

(घ) बेल और लताएँ यदि नीचे छाया में पड़ी रहेंगी तो वे नष्ट हो जाएँगी। उन्हें भी प्रकाश की ज़रूरत होती है इसलिए वे निरंतर ऊपर की ओर बढ़ती है। साथ ही हमें यह संदेश देती हैं कि हमें सदैव आगे की तरफ बढ़ना चाहिए।

(ङ) कुछ पतंगे दिन के समय पक्षियों के डर से बाहर नहीं निकलते क्योंकि पक्षी उन्हें देखते ही खा जाते हैं।

लिखित

1. (क) अंकुर मिट्टी से बाहर ऐसे उठता है जैसे कोई शिशु अपना नन्हा-सा सिर उठाकर आश्चर्य से नई दुनिया को देखता हो।

   (ख) सभी गाछ-बिरछ में दो भाग होते हैं : जड़ व तना।

   (ग) सब पेड़-पौधे मरने से पहले अपनी संतान छोड़ जाने के लिए व्यग्र रहते हैं।

   (घ) जब पेड़-पौधों पर फूल खिल जाते हैं तब वे अपने बंधु-बांधवों को बुलाते हैं।

   (ङ) मधुमक्खियाँ एक फूल के परागकण दूसरे फूल पर ले जाती हैं। उनके इस उपकार से बीज पकता है।

2. (क) एक पौधे को गमले की सहायता से उलटा रखा गया, अर्थात जड़ ऊपर की ओर। इसका परिणाम यह निकला कि पौधे को जैसे पता लग गया कि वह उलटा है। उसने स्वयं ही अपनी स्थिति बदल ली, अर्थात जड़ नीचे और पत्ती-डालियाँ ऊपर की ओर घुमा दीं।

   (ख) मिट्टी में अनेक तत्व होते हैं। मिट्टी में पानी डालने पर वे द्रव्य डाल जाते हैं। इन द्रव्यों को पेड़-पौधों की जड़े सोख लेती हैं। यही द्रव्य वायु की सहायता से पेड़-पौधों के लिए भोजन बनते हैं।

   (ग) प्रकाश पेड़-पौधों के जीवन का मूल-मंत्र है। प्रकाश के अभाव में पेड़-पौधों का जीवन असंभव है। सूर्य के प्रकाश की सहायता से ही पेड़ 'अंगारक' वायु से अंगार अलग करते हैं। सूर्य-किरण का स्पर्श पाकर ही पेड़ फलता-फूलता है।

   (घ) पेड़ भी मानव की भाँति बूढ़े होते हैं। बूढ़ापे में पेड़ सूख जाता है। उसकी शक्ति क्षीण हो जाती है। पहले (पेड़ की जवानी में) हवा चलने पर उसकी पत्तियाँ लहराने और झूमने लगती थीं। अब हवा के झोंके उसे कँपकपा जाते हैं। एक-एक कर उसकी डालियाँ टूटने लगती हैं और किसी दिन वह धड़धड़ाकर धरती पर आन गिरता है।

3. (क) (*i*), (ख) (*iii*), (ग) (*ii*), (घ) (*iii*)

4. (क) यह पंक्ति बीज के लिए लिखी गई है। धरती में दबे बीज को वर्षा, प्रकाश, वायु के रूप में पोषण मिलता है। उसका ढक्कन खुल जाता है। तब वह अंकुर के रूप में धरती से बाहर निकलने को उत्सुक हो उठता है। ऐसा लगता है जैसे पूरी प्रकृति उसे बाहर आने को प्रेरित कर रही हो।

   (ख) यहाँ लेखक ने पेड़ की तुलना मानव से की है। मानव भी अपनी संतान के लिए सर्वश्रेष्ठ करना चाहता है। वह अपनी संतान के लिए कोई भी दुख झेलने को तत्पर रहता है। इसी प्रकार पेड़ भी अपनी संतान के लिए अपना जीवन न्योछावर कर देते हैं।

5. पेड़ के बुढ़ापे और मानव के बुढ़ापे में अनेक समानताएँ व अनेक असमानताएँ हैं।

   संकेत : समानताएँ–दोनों के शरीर क्षीण हो जाते हैं, ताकत समाप्त हो जाती है, बीमारियों के शिकार आदि।

   असमानताएँ–मानव के पास सेवा करने हेतु संतान, पेड़ों को यह सुविधा नहीं, अपनी रक्षा करने में मानव अधिक सक्षम, पेड़ अपनी रक्षा हेतु कृत्रिम उपाय नहीं करते।

भाषा-बोध

1.

	उपसर्ग	मूलशब्द		उपसर्ग	मूलशब्द
(*i*)	अन	गढ़	(*ii*)	अन	छीला
(*iii*)	अन	जाना	(*iv*)	अन	आवश्यक
(*v*)	अ	दृश्य	(*vi*)	अ	परिचित
(*vii*)	अ	क्षम	(*viii*)	अ	सफल

2. ड–डोर, डुगडुगी, डरपोक; ढ–ढोंगी, ढोलकी, ढिंढोरा; ड़–पेड़, सड़क, झाड़ी; ढ़–बढ़ई, पढ़ाई, टेढ़ा

3. (ख) किसके दाँत कठोर हैं?
(ग) किसमें हज़ार-हज़ार नल हैं?
(घ) किसकी करुणा अजीब है?
(ङ) किसके अभाव में बेल-लताएँ मर जाएँगी?

4. (*i*) जल्दी-जल्दी, (*ii*) बड़ा-सा, (*iii*) बड़ी-बड़ी, (*iv*) बहुत-सा, (*v*) रूखा-सूखा

5. केवल समझाने हेतु।

रचनात्मक कार्य

1. भारत के नोबल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिक : सी.वी. रमन, डॉ० हरगोबिंद खुराना, एस. चंद्रशेखर, वेंकटरामन।

2. **संकेत :** दोनों नाज़ुक होते हैं, दोनों को अत्यधिक देखभाल की आवश्यकता होती है, शिशु कई बार रात को या चलते-खेलते समय गिर सकते हैं, अंकुर कई बार कुचले जाते हैं या बकरियाँ आदि जानवर खा जाते हैं।

3. बोलने-बताने हेतु बच्चों का उत्साहवर्धन करें।

4. क्रिया-कलाप हेतु बच्चों का मार्ग-दर्शन करें।

7. मानवता

मौखिक

(क) एलिशा न धनी ही था और न ही निर्धन। वह मधुक्खियाँ पालकर अपने परिवार का पेट पालता था। वह बहुत दयालु था और सदा प्रसन्नचित्त रहता था। वह अपने परिवार व पड़ोसियों के साथ प्रेमपूर्वक रहता था।

(ख) एलिशा ने एफ़िम को तीर्थ-यात्रा की प्रतिज्ञा की याद दिलाई और कहा कि तीर्थ-यात्रा करने से आत्मा पवित्र होती है।

(ग) क्योंकि वह झोंपड़ी में रह रहे लोगों की सेवा करना चाहता था।

(घ) एफ़िम को चर्च में भी अपने पैसों की चिंता हो रही थी कि कहीं कोई उसकी जेब न काट ले।

(ङ) चर्च में एफ़िम आश्चर्यचकित इसलिए रह गया क्योंकि वहाँ उसे एक वृद्ध पुरुष की झलक दिखाई दी जो बिलकुल एलिशा की तरह था।

लिखित

1. (क) एफ़िम गंभीर और बुद्धिमान व्यक्ति था।
(ख) तीर्थ-यात्रा के समय एलिशा और बेफ़िक्र था, जबकि एफ़िम अशांत था।
(ग) क्योंकि एलिशा ने तीर्थ-यात्रा करने की बजाय तीन प्राणियों की सेवा करना उचित समझा इसलिए एफ़िम अकेला ही जेरुसलेम की ओर बढ़ गया।
(घ) एलिशा ने घर अपने घर वालों को बताया कि उसका सारा धन मार्ग में ही समाप्त हो गया, अत: वह एफ़िम के साथ नहीं गया और रास्ते से ही लौट आया।

2. (क) एलिशा ने सर्वप्रथम तो अपना भोजन उन्हें भेंट कर दिया। फिर कुएँ से पानी लाकर उनकी प्यास बुझाई। अगले दिन उसने घर की सफ़ाई की, चूल्हा जलाया और भोजन बनाया। वह घर के लिए आवश्यक सामग्री खरीद लाया। एलिशा ने उन लोगों के लिए एक गाय और खेत जोतने के लिए एक घोड़ा भी खरीदा। इतना ही नहीं, उसने फ़सल आने तक के लिए अनाज भी खरीदकर रख दिया।
(ख) स्त्री ने एफ़िम को एलिशा के बारे में बताया कि वह (एलिशा) मनुष्य के रूप में देवदूत था। वह उन सबसे प्रेम करता था। और वह अपना नाम बताए बिना ही वहाँ से चला गया था। यदि उसने उनकी सहायता न की होती तो वे सब मर गए होते।
(ग) गाँव लौटकर एफ़िम ने एलिशा को बताया कि उसका (एफ़िम का) शरीर तो जेरुसलेम में पहुँच गया था लेकिन शायद आत्मा नहीं पहुँच पाई। उसे विश्वास था कि एलिशा की आत्मा वहाँ पहुँच चुकी थी और वही ईश्वर का प्रिय भी था।
(घ) **संकेत :** एफ़िम गंभीर, बुद्धिमान, धनी, व्यवहारिक बुद्धि वाला, नफ़ा-नुकसान की गणना करने वाला, मानवीय संवेदनाओं से हीन, रूखा-सूखा।
एलिशा न धनी व निर्धन, सामान्य व्यक्ति, दयालु, प्रेमपूर्ण, प्रसन्नचित्त, परोपकारी, मानवीय संवेदनाओं से भरा हुआ, सहज, प्रभु-प्रेमी।

3. (क) (*iii*), (ख) (*i*), (ग) (*i*), (घ) (*ii*)

4. (क) यह कथन सौ प्रतिशत सही है कि आत्मा की पवित्रता से बढ़कर और कुछ नहीं है। मानव धरती पर जन्म लेता है, धन कमाता है; परिवार का पालन-पोषण करता है। इन्हीं सब कार्यों को समाप्त करने में उसका जीवन समाप्त हो जाता है। उसे आत्मा-परमात्मा का कोई ध्यान ही आता। सद्कार्यों से आत्मा पवित्र होती है और पवित्र आत्मा में ही मानव-प्रेम, परोपकार, भक्ति जैसे गुण विकसित होते हैं। इन्हीं गुणों से आत्मिक शांति मिलती है।
(ख) यदि कोई सुबह-शाम मंदिर, मसजिद या गुरुद्वारे, चर्च में तो जाए लेकिन किसी गरीब की सहायता न करे तो उसका जीवन निरा पाखंड

हो जाएगा। हर व्यक्ति के भीतर परमात्मा का वास है। सब महापुरुषों ने यही भेद समझाया है। इसीलिए ध्यान को इतना महत्त्व दिया गया है। तभी तो कहा गया है कि मानव-सेवा ही सच्ची ईश्वर-सेवा है।

5. **संकेत :** एफ़िम द्वारा किए गए सब कार्य उचित ही थे, फिर भी बच्चे अपना निजी दृष्टिकोण प्रस्तुत करें क्योंकि समय के अनुसार सेवा का स्वरूप भी बदल जाता है।

भाषा-बोध

1. ध्यान + पूर्वक = ध्यानपूर्वक, शक्ति + शाली = शक्तिशाली, श्रद्धा + पूर्वक = श्रद्धापूर्वक, आदर + पूर्वक = आदरपूर्वक, आयुष + मान = आयुषमान
2. (क) यदि बारिश न हुई होती तो पिक्चर देखने ज़रूर जाते।
   (ख) यदि तुम तेज़ दौड़े होते तो पहला पुरस्कार तुम्हीं को मिलता।
   (ग) यदि धूप खिली होती तो कपड़े जल्दी सूख जाते।
   (घ) यदि कुत्ते ने बिल्ली को पकड़ लिया होता तो उसकी खैर नहीं थी।
3. (*i*) घनिष्ठ मित्र, (*ii*) बड़ा परिवार (*iii*) थोड़ा धन, (*iv*) छोटा गाँव, (*v*) चार रोटियाँ, (*vi*) कोमल स्त्री
4. दयालु– मदर टेरेसा बहुत दयालु थीं।
   प्रतिज्ञा– प्रतिज्ञा पूर्ण करने वाले महान बन जाते हैं।
   टूट पड़ना– भारतीय सैनिक शत्रु सेना पर टूट पड़े।
   हृदय भर आना– उसकी दुर्दशा देखकर मेरा हृदय भर आया।
5. (*i*) महिला, (*ii*) बालिका, (*iii*) पुत्री, (*iv*) वृद्धा
6. केवल समझाने हेतु।

रचनात्मक कार्य

1. बच्चों को प्रेरित करें कि स्वयं चर्च में जाकर प्रत्यक्ष देखें।
2. स्वयं कीजिए।
3. **संकेत : काशी विश्वनाथ**–हिंदुओं का तीर्थ-स्थल, मक्का मदीना–मुसलमानों का तीर्थ-स्थल (यहाँ 'हज' किया जाता है;)

   कीर्तपुर साहिब–पंजाब के ज़िला रोपड़ में स्थित सिखों का पवित्र तीर्थ-स्थल
4. बच्चे स्वयं करें।
5. (*i*) बाबा आम्टे–संकेत : 26 दिसंबर, 1914 को हिंगन घाट (वर्तमान महाराष्ट्र) में संपन्न परिवार में जन्म; वकालत की शिक्षा एवं पेशा; स्वतंत्रता सेनानी; आदिवासियों, दलितों एवं कोढ़ रोग से पीड़ितों की सेवा; आनंदनवन में अस्पताल की स्थापना; कोढ़ियों के लिए 'सोमनाथ' व 'अशोकवन' आश्रमों की स्थापना; 9 फरवरी, 2008 को निधन; बेटे डॉ० विकास आम्टे व डॉ० प्रकाश आम्टे अपनी पत्नियों सहित समाज-सेवा को समर्पित।

   (*ii*) मदर टेरेसा–26 अगस्त, 1910 को स्कोज़े (मैक्डोनिया गणतंत्र) में जन्म, 1929 ई० में भारत आगमन, अध्यापिका, मिशनरीज़ ऑफ़ चैरिटी की स्थापना, कुष्ठ रोगियों की सेवा, भारत रत्न व नोबेल पुरस्कार से सम्मानित, 5 सितंबर, 1997 को कोलकाता में निधन, मृत्यु के बाद 'संत' की उपाधि, वर्तमान में 133 देशों में आश्रम।

   (*iii*) स्वामी दयानंद–12 फरवरी, 1824 को ब्राह्मण परिवार में गुजरात में जन्मे; वेद प्रचार का कार्य किया; 'आर्यसमाज' की स्थापना की; वनवासियों, स्त्रियों, दलितों और अछूतों के हित में अनेक कार्य किए; कुरीतियों का विरोध किया; 30 अक्तूबर, 1883 ई० को प्राण त्यागे।
6. एवं 7. के लिए बच्चों से संक्षिप्त चर्चा करें।

8. धनवर्षण

मौखिक

(क) मंत्र का गुण यह था कि एक विशेष प्रकार का नक्षत्रयोग आने पर जब उसका प्रयोग किया जाता तो आकाश से नाना प्रकार के रत्न और धन की वर्षा होने लगती थी।

(ख) शिष्य ने गुरु को समझाया कि नक्षत्र योग आते ही वह धनवर्षा के मंत्र का प्रयोग न करें। यदि ऐसा हुआ तो गुरु जी मरेंगे और डाकू भी।

(ग) ब्राह्मण ने कहा था कि अगला नक्षत्र योग एक साल बाद आएगा जब धनवर्षा होती है। डाकुओं ने सोचा यह झूठ बोल रहा है इसलिए डाकुओं ने ब्राह्मण को मार डाला।

(घ) एक ने भात में ज़हर मिला दिया और दूसरे ने पहले को तलवार से काट कर मार डाला।

लिखित

1. (क) डाकू जंगल में यात्रियों का धन-माल लूट लेते थे।
   (ख) डाकुओं ने गुरु को पकड़ रखा और चेले को पैसे ले आने को भेजा।
   (ग) नक्षत्र योग आता देख गुरु के मन में विचार आया कि क्यों न मैं धन-वर्षा करवा कर डाकुओं को धन दे दूँ और यहाँ से निकल लूँ।

(घ) डाकू एक वर्ष तक धन की प्रतीक्षा नहीं करना चाहते थे, इसलिए वे ब्राह्मण पर बिगड़ उठे।

(ङ) शिष्य ने देखा कि धन-रत्न चारों ओर बिखरा पड़ा है और कोई भी जीवित नहीं बचा है।

2. (क) डाकू जंगल में राहगीरों को पकड़ लेते थे और उनका धन-माल लूट लेते थे। यदि किन्हीं राहगीरों से उन्हें धन नहीं मिलता था तो वे उनमें से किसी एक को बंधक बना लेते थे। जैसे यदि वे दो भाइयों को पकड़ लेते तो छोटे को बंधक बना बड़े को पैसे ले आने को भेज देते थे।

(ख) धन वर्षा के लिए गुरु जी ने स्नान किया, नए वस्त्र पहने, चंदन लगाया और फूलों की माला पहनी। इसके बाद उन्होंने मंत्र पढ़ा। मंत्र पढ़कर उन्होंने आकाश की ओर देखा। उनके ऐसा करते ही आकाश से धन-रत्नों की वर्षा होने लगी।

(ग) नए डाकू पहले के डाकुओं से धन छीनना चाहते थे। पहले के डाकुओं ने नए डाकुओं को बताया कि धन चाहिए तो इस ब्राह्मण से माँग लो। यह आकाश से धन वर्षा करवा सकता है। नए डाकुओं को भी यह बात जँच गई क्योंकि उनके आपसी झगड़े से जान-माल का भयंकर नुकसान होता इसलिए उन्होंने पहले के डाकुओं को जाने दिया और ब्राह्मण को पकड़ लिया।

(घ) इसका एकमात्र कारण था—धन का लालच। ब्राह्मण नए डाकुओं को धन दे न सका। उन्होंने पहले के डाकुओं को पकड़ लिया। दोनों गुटों में भयंकर मारा-मारी हुई। इस मारा-मारी का परिणाम यह हुआ कि उनमें से केवल दो ही डाकू जीवित बचे।

(ङ) जंगल में गुरु और शिष्य दोनों ही पकड़े गए थे। डाकुओं ने गुरु को बंधक बना शिष्य को पैसे ले आने को भेजा। तब शिष्य ने गुरु को समझाया था कि किसी भी कीमत पर धन वर्षा न करवाना। इसके परिणाम भयंकर हो सकते हैं, और हुआ भी ऐसा ही। गुरु ने शिष्य की बात नहीं मानी और प्राणों से हाथ धो बैठे। इससे यही पता चलता है कि शिष्य, गुरु से अधिक बुद्धिमान था।

3. (क) (*i*), (ख) (*ii*), (ग) (*iii*), (घ) (*i*)

4. यह कथन जंगल में प्रतीक्षारत एक डाकू के लिए प्रयुक्त हुआ है। वास्तव में जीवित बचे दोनों डाकुओं के मन में धन का लालच आ चुका था। दोनों ही धन के एकमात्र स्वामी बनना चाहते थे। शहर से भोजन लाने गए डाकू ने भोजन में विष मिला दिया था और जंगल में प्रतीक्षारत डाकू उसे मार डालने को तैयार बैठा था। इसीलिए कहा गया है—पहला आदमी पहले ही सज-धजकर बैठा था।

5. **संकेत :** गुरु का धैर्य न रखना, घमंड में आना, वाहवाही लूटने को उद्धत होना, यदि गुरु शिष्य की बात मान लेते तो उन्हें जान से हाथ न धोना पड़ता, अपनी कला/शक्ति से जन-कल्याण कर सकते थे।

संकेत : अनेक उपाय हो सकते हैं, बच्चों को प्रे. रित करें कि वे अपने दिमाग से सोचें और बताएँ, शिक्षकगण किसी भी उपाय को गलत न बताएँ केवल कुछ सुधार या उचित मार्ग-दर्शन कर दें ताकि बच्चों का उत्साह बढ़े।

भाषा-बोध

1. (*i*) बाप-बेटा, (*ii*) मार-काट, (*iii*) गुरु-चेला, (*iv*) रुपया-पैसा, (*v*) माँ-बेटी, (*vi*) माल-असबाब

2. क्ष – कक्षा, नक्षत्र, क्षेत्रफल, प्रक्षेपण, वक्ष
त्र – पत्र, कुरुक्षेत्र, नेत्र, त्रिकोण, पात्र
ज्ञ – ज्ञान, विज्ञान, अज्ञेय, विज्ञापन, यज्ञ
श्र – आश्रम, श्रीमान, परिश्रम, श्रमिक, श्रेष्ठ

3. ब्राह्मण ने देखा, नक्षत्र योग आ रहा है। देखकर उन्होंने सोचा, 'अच्छा, धन के लिए ही न डाकू हमको नाना प्रकार के कष्ट दे रहे हैं। यह धनवर्षण का योग तो दिखाई देता है। मैं इतना कष्ट क्यों सहूँ? मैं इसी समय मंत्र के बल से धन बरसाकर, इन्हें देकर क्यों न चला जाऊँ!'

4. र् – बारिश, वरदान, बारह, भीतरी
र्क – कर्म, निर्माण, वार्षिक, व्यर्थ
र्प्र – प्रकाश, भ्रम, चक्र, प्रकृति
र्ट्र – मजिस्ट्रेट, राष्ट्रीय, ड्रामा, ड्राइंग

5. (*i*) गाँव, (*ii*) मंत्र, (*iii*) जंगल, (*iv*) बाँधना, (*v*) लौटूँगा, (*vi*) सहूँ

रचनात्मक कार्य

1. समाचार एकत्र करने हेतु बच्चों का उत्साहवर्धन एवं मार्ग-दर्शन करें।

2. चर्चा में शामिल होकर बच्चों को अंधविश्वास न करने को प्रेरित करें।

3. **संकेत : संयम :** कहावत—सहज पके सो मीठा होए, जल्दबाज़ी में व्यक्ति होशपूर्वक कार्य नहीं करता, असंयम से मानसिक तनाव बढ़ता है, तनाव में किया गया कोई भी कार्य सुंदर नहीं बनता, संयम से किए

गए कार्य में सुंदरता होती है, रचनात्मकता होती है, ऐसे कार्य के सद्‌परिणाम आते हैं न कि दुष्परिणाम, प्रत्येक व्यक्ति को संयम से काम लेना चाहिए।

4. पाठ्य-पुस्तक में दिए गए उदाहरण का कुछ विस्तार से उल्लेख करें।

9. फूल और काँटा

मौखिक

(क) एक जैसी चाँदनी बिखराता है।
(ख) चुभोने वाला।
(ग) कपड़ों को फाड़ देता है।
(घ) एक जैसा पोषण मिलने पर भी फूल को सब अपने शीश पर धारण करते हैं। देवता को अर्पित करते हैं और काँटा सबकी आँखों में खटकता है। सब उससे दूर ही रहते हैं।
(ङ) अपनी खुशबू, सौंदर्य और कोमलता से फूल मन को प्रसन्न कर देता है।

लिखित

1. (क)काँटे की, (ख) फूल का, (ग) जब किसी में कोई बुराई हो, (घ) बड़प्पन
2. (क) (*iv*), (ख) (*iii*), (ग) (*i*), (घ) (*ii*)
3. (क) इन पंक्तियों द्‌वारा कवि प्रमाणित करना चाहते हैं कि एक ही कुल में पैदा होने वालों का समान होना ज़रुरी नहीं। एक ही कुल में जन्मे व्यक्तियों का स्वभाव बिलकुल विपरीत भी हो सकता है।
   (ख) इन पंक्तियों में कवि व्यक्ति के निजी गुण-दुर्गुण की चर्चा करना चाहते हैं। उनका कहना है कि व्यक्ति के स्वयं के गुण ही उसके काम आते हैं। यदि किसी में दुर्गुण हों तो वंश का बड़प्पन काम नहीं आता।
4. **संकेत :** खाद, बीज, दवाइयाँ, माली की देखभाल आदि।
   संकेत : यदि काँटे न हों तो संभव है कि फूल जानवरों और छोटे बच्चों से अपनी रक्षा न कर पाएँ।

भाषा-बोध

1. कुल – श्रीरामचंद्र का जन्म सूर्य **कुल** में हुआ था।
   पूरी गाड़ी में **कुल** पचास यात्री थे।
   पर – छत **पर** कौन है?
   मैं आना तो चाहता था, **पर** मजबूर था।
   वर – रावण को शिवजी ने **वर** दिया था।
   वर-वधू फ़ोटो खिंचवा रहे हैं।
   जी – मेरा **जी** करता है कि आज पिकनिक पर जाऊँगा।
   नाटक 'हरिश्चंद्र' में मृत रोहित फिर **जी** उठा।
2. (क) एक ही जगह में (पर) जन्म लेते हैं।
   (ख) उन पर मेह एक-सा बरसता है।
   (ग) उनके ढंग एक-से नहीं होते।
   (घ) एक सबकी आँख में खटकता है।
   (ङ) दूसरा सुर-सीस पर सोहता है।
3. एक-सी–हवाएँ, प्यार-डूबी–तितलियाँ, श्याम–तन, अनूठा–रस, निराले–रंग
4. केवल समझाने हेतु।

रचनात्मक कार्य

1. बच्चों को प्रेरित करें एवं मार्ग-दर्शन दें।
2. कौरव-पांडव, कंस और कृष्ण, पृथ्वीराज चौहान और जयसिंह आदि।
3. **संकेत :** हाँ तुलना की जा सकती है, विभीषण और प्रह्लाद ने जनकल्याण तथा प्रभु-स्तुति का कार्य किया, रावण और हिरण्यकश्यप के कार्य जनता को त्रास (दुख) देने वाले थे।

10. स्वामी हरिदास

मौखिक

(क) संगीतकार।
(ख) खेल को विद्‌यालय का कमरा बनाने और अध्यापक का सा रौब जमाने का व्यंग्य।
(ग) भारतीय संगीत में लोक-संगीत भी संगीत का एक प्रकार है, जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक गाया-बजाया जाता है।
(घ) आश्रम में सम्राट के वेश में न चलने को।
(ङ) स्वामी हरिदास ने कहा कि ''तुम्हारी गायकी की प्रशंसा आश्रम में बैठा सुनता ही रहता हूँ। बहुत प्रसन्नता होती है। सुना है, तुमने कुछ नई राग-रागनियों की रचना की है।''

लिखित

1. (क) भारतीय संगीत में आनंद की लहर है।
   (ख) उत्तर भारत में जो शास्त्रीय राग-रागिनियाँ गाई जाती हैं, उन्हें 'हिंदुस्तानी संगीत' कहा जाता है।
   (ग) दक्षिण भारत में गाई-बजाई जाने वाली राग-रागिनियाँ 'कर्णाटक संगीत' कहलाती हैं।
   (घ) उन्होंने सम्राट अकबर की महल में आने की प्रार्थना ठुकरा दी थी।
   (ङ) वे इस भ्रम में थे कि सम्राट होने के कारण स्वामी हरिदास उनकी बात को नहीं टालेंगे।
2. (क) स्वामी हरिदास ने तानसेन से अपनी (तानसेन

की) नई रचना सुनाने को कहा था। तानसेन की रचना सुनकर वे आवेश में आ गए क्योंकि तानसेन का सुर गलत था। तब उन्होंने वही रचना खुद गानी आरंभ कर दी।

(ख) स्वामी हरिदास अनुभवी संत थे। उन्होंने अकबर-तानसेन को आपस में इशारे करते देख लिया था। अकबर के इशारे एक सम्राट के समान थे। उन्हीं इशारों से वे अकबर को पहचान गए।

(ग) तानसेन और स्वामी हरिदास की गायकी में ज़मीन-आसमान का अंतर था। स्वामी हरिदास का स्वर मधुर और राग लयबद्ध था। यह अंतर इस कारण था कि तानसेन को बादशाह के मूड के अनुसार गाना होता था, जबकि स्वामी हरिदास तब गाते थे जब उनका मन होता था। तानसेन हिंदुस्तान के बादशाह को रिझाने के लिए गाते थे और स्वामी जी संसार के स्वामी को रिझाने के लिए।

(घ) इस पाठ से हमें यह पता चलता है कि सम्राट अकबर एक महान सम्राट थे। वे एक सच्चे मुसलमान थे और सच्चा मुसलमान सब धर्मों का आदर करता है। वे हिंदुस्तान के सभी रीति-रिवाज़ों और कलाओं का सम्मान करते थे।

3. (क) संगीत स्वामी, (ख) वृंदावन (ग) तानपूरा

4. (क) यह पंक्ति सम्राट अकबर द्वार भारत-भूमि के लिए कही गई है। उनका जन्म भारत में ही हुआ था। वे भारत के सभी रीति-रिवाज़ों तथा कलाओं की इज़्ज़त करते थे, उन्हें ऊँचा दर्ज़ा देते थे। उन्हें हिंदुस्तान पर गर्व था। वे भारत की मिट्टी को चूमने के लायक समझते थे। इसीलिए उन्होंने कहा कि वे यहाँ की पवित्र भूमि को नमस्कार करते हैं।

(ख) ये पंक्तियाँ नटी द्वारा सब कलाकारों के लिए कही गई है। नटी कहती है कि लोगों को रिझाना एक सामान्य-सा कार्य है। ऐसा करके तुम संगीत-सम्राट तो बन सकते हो लेकिन परमात्मा को नहीं पा सकते। अगर वास्तव में संगीतकार बनना हो तो प्रभु-स्तुति करते हुए संगीत की साधना करो।

5. **संकेत :** स्वामी हरिदास मस्त-मौला संत, प्रभु-भक्ति में मगन, न उन्हें पद का कोई लालच और न ही धन का, जब मन किया गा लिया, मस्त हो लिए, उनकी नज़र में महल का या धन-दौलत का कोई विशेष महत्त्व नहीं, अपनी दिनचर्या (ईश-भक्ति) छोड़कर महल में जाने का विचार ही नहीं आया होगा, तानसेन को उनके स्वभाव के बारे में पहले से पता था, इसलिए उसे पूरा संदेह था कि स्वामी जी सम्राट का आग्रह ठुकरा देंगे।

भाषा-बोध

1. चुस्त, पाजामा, जहाँपनाह, बादशाह, बदनसीब, मौका, मुश्किल, नाज़, पाक, ज़मीन

2. (क) में, (ख) के, (ग) ने, को, (घ) से, (ङ) के लिए

3. (क (*i*) अध्यापिका, (*ii*) सेविका, (*iii*) साम्राज्ञी, (*iv*) स्वामिनी, (*v*) शिष्या, (*vi*) गायिका
(ख) सम्राट–राजा, नरेश; सेवक–नौकर, चाकर; चरण–पैर, पद; वन–जंगल, अभ्यारण्य
(ग) कठोर × कोमल, सेवक × मालिक, मधुर × कटु, आदर × अनादर, लौकिक × अलौकिक, हित × अहित
(घ) (*i*) रागिनियाँ, (*ii*) कुरते, (*iii*) ओढ़नियाँ, (*iv*) तंबूरे, (*v*) पगड़ियाँ, (*vi*) घाघरे, (*vii*) शैलियाँ, (*viii*) पाजामे, (*ix*) खुशियाँ, (*x*) इशारे

4. बच्चों के उच्चारण पर ध्यान रखें, उन्हें 'ज' और 'ज़' का उच्चारण करके समझाएँ।

रचनात्मक कार्य

1. केवल समझाने हेतु।

2. राजस्थान

5. **बैजू बावरा :** तानसेन व अकबर के समय के महान गायक, इन्होंने गायिकी में तानसेन को हराकर उसके अभिमान को तोड़ा था।

6. बच्चों को गाने को प्रेरित करें।

11. एक नदी की आत्मकथा

मौखिक

(क) वह पूरे उफ़ान पर होती है।

(ख) ब्रह्मपुत्र की यात्रा इसलिए कठिन है क्योंकि तिब्बत और भारत के बीच इसकी जलधारा चट्टानों से पटी पड़ी है। चारों ओर घने जंगल हैं। यदि कोई विपरीत दिशा में नौका बहाना चाहे तो वह उलट जाती है।

(ग) ब्रह्मपुत्र नदी समय-समय पर अपना मार्ग बदल देती है। गाँव और नगर भी इसकी चपेट में आ जाते हैं। किनारों की मिट्टी भी इसमें बह जाती है। कभी-कभी बाढ़ भी आ जाती है। खेत-खलिहान सब इसमें डूब जाते हैं।

(घ) यह एक जलमार्ग के रूप में भी प्रयोग की जाती

है। एक तट से दूसरे तट को देख पाना असंभव है। आमतौर पर ऐसा नहीं होता। इसीलिए ब्रह्मपुत्र दर्शकों के आश्चर्य का कारण है।

लिखित

1. (क) क्योंकि जिस प्रकार सागर में द्वीप बन जाते हैं उसी प्रकार ब्रह्मपुत्र में भी कई द्वीप निर्मित हो चुके हैं।
(ख) ब्रह्मपुत्र के तट पर कई छोटे-बड़े नगर बसे और उनमें सभ्यताएँ पलीं। असम की राजधानी गुवाहाटी भी इसी के तट पर बसी है।
(ग) ब्रह्मपुत्र तिब्बत होते हुए भारत आती है।
(घ) क्योंकि इसके प्रति लोगों के मन में बहुत सम्मान है।

2. (क) डोंगी टोकरी के-से आकार वाली छोटी नाव होती है। पतवार से खेई जाने वाली इन डोंगियों में एक-दो व्यक्ति बैठ सकते हैं। ये डोंगियाँ तेज़ धार में भी सवारियों को डूबने नहीं देतीं और उन्हें नदी पार करा देती हैं। कुछ मछुआरे उनकी सहायता से मछलियाँ भी पकड़ते हैं।
(ख) ब्रह्मपुत्र में डोंगियाँ चलती हैं, नावें चलती हैं, जलपोत चलते हैं। इनके द्वारा न केवल सवारियों को बल्कि सामान भी ढोया जाता है। इसकी सहायता से सामान को दूर-दूर पहुँचाया जाता है। लोग इसकी धारा में मछलियाँ मारते हैं और रोज़गार प्राप्त करते हैं। इस प्रकार यह स्थानीय लोगों के रोज़गार तथा व्यापार में सहायक है।
(ग) ब्रह्मपुत्र बाढ़ के दिनों में विशाल रूप धारण कर लेती है। तब धान के अनगिनत खेत इसके पेट में समा जाते हैं लेकिन जब बाढ़ का पानी उतरता है तब यह खेतों में छोड़ जाती है उपजाऊ मिट्टी। इस मिट्टी के कारण खेतों में भरपूर फ़सल होती है। इस कारण असमवासी ब्रह्मपुत्र को वरदान के रूप में मानते हैं।

3. (क) (*iii*), (ख) (*ii*), (ग) (*iii*), (घ) (*i*)

4. (क) यह पंक्ति ब्रह्मपुत्र नदी ने अपने बारे में कही है। ब्रह्मपुत्र एक विशाल नदी है। इसके तट पर अनेक छोटे-बड़े नगर बसे हैं। यह लोगों के लिए अनेक रूपों में सहायक हैं। यह यातायात में सहायक हैं, रोज़गार में सहायक हैं, व्यापार में सहायक हैं, खेती-बाड़ी में सहायक हैं। यह असम की जीवन-रेखा है। प्राचीन संस्कृति की प्रतीक है। इसी कारण यह लोगों की श्रद्धा और आस्था की पात्र है।
(ख) यहाँ ब्रह्मपुत्र नदी ने अपने बारे में होने वाले भ्रम को दूर किया है। वैसे तो 'नदी' स्त्रीलिंग शब्द है लेकिन ब्रह्पुत्र ने अपने लिए पुल्लिंग शब्दों का प्रयोग किया है। इसका कारण यह है कि ब्रह्मपुत्र विश्व की एकमात्र नदी है जिसके लिए 'नद' (पुल्लिंग) शब्द का प्रयोग होता है लेकिन कुछ भी हो, आखिरकार है तो वह एक नदी ही।

5. **संकेत : परमाणु शक्ति की सृजनात्मकता :** परमाणु शक्ति से बिजली पैदा की जा सकती है, विशाल जलपोत व पनडुब्बियाँ चलाई जा सकती हैं, विशाल चट्टानों को तोड़ने तथा खदानों में प्रयोग हो सकती है।
परमाणु शक्ति की विनाशशीलता : बमों के रूप में भयंकर रूप से तबाही मचा सकती है, जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर हुए परमाणु हमले को विश्व आज तक भूला नहीं पाया है।

भाषा-बोध

1. **उद्देश्य विधेय**
(ख) नाविक – सवारियों को उस पार पहुँचाते हैं।
(ग) किनारों के लोग–सतर्क रहते हैं।
(घ) लोग – इन द्वीपों पर बस गए हैं।
(ङ) जलपोत – प्रायः दूर-दूर तक चले जाते हैं।

2. पीड़ा + इत = पीड़ित; अंक + इत = अंकित, शोभा + इत = शोभित, प्रदूषण + इत = प्रदूषित, बाधा + इत = बाधित

3. (*ii*) आज्ञाकारी, (*iii*) क्रांतिकारी, (*iv*) परोपकारी, (*v*) प्रतिकारी

4.

पुनरुक्त	समान अर्थ वाले	विपरीत अर्थ वाले
छोटे-छोटे	चलते-फिरते	सोते-जागते
धीरे-धीरे	खेलते-कूदते	हँसते-रोते
काले-काले	हँसते-गाते	काले-सफ़ेद

5. (*i*) असमवासी, (*ii*) उपजाऊ, (*iii*) कल्पना, (*iv*) किलोमीटर, (*v*) गंगा, (*vi*) गाँव, (*vii*) नदी, (*viii*) प्राचीन, (*ix*) भारत, (*x*) राजधानी, (*xi*) विशाल, (*xii*) सहायता

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :**

नदी	शहर
गंगा	– वाराणसी, कानपुर, इलाहाबाद, पटना
यमुना	– दिल्ली, मथुरा, आगरा
ब्रह्मपुत्र	– गुवाहाटी
गोमती	– लखनऊ
कृष्णा	– विजयवाड़ा
हुगली	– कोलकाता

ताप्ती – सूरत
चंबल – ग्वालियर
नर्मदा – जबलपुर

2. **संकेत :** बाँध बनाकर, बिजली, सिंचाई, बाढ़ पर नियंत्रण, बाँध के कारण बनने वाली झील में पर्यटन, सैर-सपाटा।

3. **संकेत :** गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र; कुंभ का मेला – इलाहाबाद, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक

5. चर्चा हेतु बच्चों को प्रेरित करें, उचित मार्ग-दर्शन करें।

7. असम में जन्मे भूपेन हज़ारिका सुप्रसिद्ध संगीतकार थे। अनेक फ़िल्मों में संगीत दिया। असम में उन्हें श्रद्धा एवं प्रेम से याद किया जाता है।

12. आत्मबोध

मौखिक

(क) वे अपनी पुरानी खानदानी इज़्ज़त के कारण कहीं कोई नौकरी-चाकरी या काम-धंधा नहीं कर पाते थे।

(ख) बड़े भाई ने कहा कि उसका सोमवार का व्रत है, वह खाना नहीं खाएगा। दूसरे ने कहा कि उसके पेट में दर्द है, डॉक्टर ने खाने को मना किया है। तीसरे ने कहा कि उसे अपने दोस्त के यहाँ दावत में जाना है।

(ग) बड़े भाई ने पेड़ पर चढ़कर सहिजन की काफ़ी फलियाँ तोड़ी।

(घ) क्योंकि बगीचे में सहिजन का पेड़ कटा पड़ा था।

(ङ) खानदान की इज़्ज़त और अपनी ईमानदारी की वजह से।

लिखित

1. (क) इसका परिणाम यह हो रहा था कि घर की गरीबी दिनों-दिन बढ़ रही थी।
   (ख) मेहमान समझ गया कि वे लोग गरीबी के शिकार हो रहे थे।
   (ग) उसे यह डर सता रहा था कि कहीं मेहमान को सब पता न लग जाए।
   (घ) इसके परिणामस्वरूप घर का काम-काज ठीक चलने लगा। घर में दूध-घी की कमी नहीं रही।
   (ङ) मेहमान ने स्वीकार किया कि आँगन का पेड़ उसी ने कुल्हाड़ी से काट गिराया था।

2. (क) मेहमान ने उस घर में दो बार भोजन किया था। भोजन के समय चारों भाइयों में से तीन ने कोई-न-कोई बहाना बनाकर खाने से इंकार कर दिया। छोटा भाई मेहमान के साथ खाने बैठा भी तो माँ ने अपने बेटे को खाने को बिलकुल न पूछा। वह निरंतर मेहमान से ही खाने का आग्रह करती रही। यदि वह अपने बेटे को कुछ परोसना भी चाहती तो बेटा पहले ही इंकार कर देता। इससे मेहमान समझ गया कि परिवार में गरीबी ने पैर पसार लिए हैं।
   (ख) मेहमान दूरदर्शी था। वह मेज़बान परिवार के बारे में सोच रहा था। वह सोच रहा था कि यह परिवार बहुत नेक और इज़्ज़तदार है लेकिन बनावटी इज़्ज़त इन पर हावी है। इसी कारण ये लोग कोई काम नहीं कर पा रहे और कष्टदायी ज़िंदगी जी रहे हैं।
   (ग) पेड़ को कटा देखकर बुढ़िया की प्रतिक्रिया अत्यंत शोकभरी थी। उसकी नज़र में वह मेहमान कोई दुष्ट था, जो पिछले जन्म का बदला लेने आया था। वह पानी पी-पीकर मेहमान को कोस रही थी।
   (घ) मेहमान के उपकारी कार्य से पूरे परिवार की दशा सुधर गई थी। चारों भाइयों ने मेहमान के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि उन्होंने (मेहमान ने) पेड़ के रूप में उनके परिवार के दुर्भाग्य को काटा था। यदि मेहमान उनकी नकद सहायता करते तो वे आलसी बन जाते और सदा दूसरों का मुँह ताकते रहते।

3. (क) (*iv*), (ख) (*ii*), (ग) (*i*), (घ) (*iii*)

4. (क) यह कथन तब का है जब पूरे परिवार ने सहिजन के पेड़ को कटा पाया। वही पेड़ पूरे परिवार का पालन कर रहा था। उसका महत्त्व ठीक वैसा ही था जैसा किसी परिवार के बड़े बुजुर्ग का होता है। इसीलिए उसे कटा देख पूरे घर में दुख का वातावरण छा गया।
   (ख) यह कथन चारों भाइयों द्वारा मेहमान की प्रशंसा में कहा गया। मेहमान ने अपनी दूरदृष्टि से परिवार को आत्म-सम्मान वापस दिलवाया था। उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने का मार्ग दिखाया था। इसीलिए चारों भाइयों ने ऐसा कहा।

5. **संकेत :** मेज़बान प्रतिष्ठित लेकिन गरीब परिवार, मेहमान की पूरी सेवा करना चाहते थे लेकिन पैसे न थे, मेहमान की खातिरदारी ज़रूरी थी, सो केवल उसी की ज़रूरत का बढ़िया खाना बनाया होगा, सब खाते तो खाना कम रह जाता, इसीलिए परिवार के सब सदस्य मेहमान के साथ खाना खाने से बच रहे होंगे।

संकेत : असंख्य ढंग हो सकते हैं (नौकरी दिलवाना, लोन दिलवाना, दुकान खुलवाना, नए कार्य का प्रशिक्षण देना आदि), बच्चों से उनका ढंग पूछें। लिखवाएँ, बच्चे कोई अनूठा ढंग भी सूझा सकते हैं।

भाषा-बोध

1. भी – मैं आइसक्रीम **भी** खाऊँगा।
   आज तो मैं **भी** खेलूँगा।
   ही – आज तुम **ही** आइस-क्रीम खाना
   आज तुम **ही** स्कूल जाना।

2. क्रियाविशेषण–
   (*i*) दिनोंदिन, (*ii*) अब, (*iii*) चारों तरफ़, (*iv*) नीचे, (*v*) आज, (*vi*) ज़रा भी, (*vii*) बड़ी सावधानी से, (*viii*) आजकल, (*ix*) ज़ोर से, (*x*) जहाँ
   वाक्य–
   (*i*) महँगाई **दिनोंदिन** बढ़ रही है।
   (*ii*) **अब** क्या किया जाए!
   (*iii*) उसने **चारों तरफ़** देखा।

3. (*i*) ऊँचे-ऊँचे– बहुत ही ऊँचे
   (*ii*) पतले-पतले– बहुत ही पतले
   (*iii*) छोटी-छोटी– बहुत ही छोटी
   (*iv*) नन्ही-नन्ही– बहुत ही नन्ही

4. (*i*) सावधानी, (*ii*) नौकरी, (*iii*) गरीबी, (*iv*) फ़ाकाकशी, (*v*) नेकनीयती, (*vi*) खातिरदारी, (*vii*) बदकिस्मती

5. (*i*) चोरी-बईमानी, (*ii*) खेत-खलिहान, (*iii*) भाई-बंधु, (*iv*) यार-दोस्त, (*v*) गली-मोहल्ला, (*vi*) लुके-छिपे

रचनात्मक कार्य

1. पौष्टिक भोजन खाने हेतु बच्चों को प्रेरित करें। कुछ हरी सब्ज़ियों (पालक, मेथी, बथुआ, घीया, मटर आदि) के गुण बताएँ।

2. **ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है :** कृपया पाठ नं: का अनुच्छेद देखें।

3. बच्चों से उनके सुझाव जानें व मार्ग-दर्शन करें। (कई देशों में मोल-भाव पर कानूनी पाबंदी है।

4. **संकेत :** मेहनत, निरंतर कार्य, सोच-समझकर पैसा खर्च करना।

5. बच्चों को बोलने-बताने हेतु प्रेरित करें।

13. दो पंछी

मौखिक

(क) एक सोने के पिंजरे में और दूसरा वन में।
(ख) एक बार दोनों का मिलन हो गया।
(ग) वन के पंछी ने पिंजरे के पंछी से वन में चलकर रहने को कहा।
(घ) नीले आकाश की तरफ़ देखकर आज़ाद होकर गाओ।
(ङ) क्योंकि वह आज़ाद होकर उड़ना चाहता है।

लिखित

1. (क) वन के पंछी ने पिंजरे के पंछी के समक्ष यह प्रस्ताव रखा कि वे दोनों मिलकर वन में चलें क्योंकि वन का पंछी तो वन में रहने का आदी था।
   (ख) वन के पंछी की बात सुनकर पिंजरे के पंछी ने पेशकश की कि क्यों न वे दोनों पिंजरे में आराम से रहें क्योंकि उसे पिंजरे में रहना सुरक्षित और आरामदायक लग रहा था।
   (ग) वन के पंछी ने पिंजरे के पंछी को बादलों के पास पहुँचकर जंगली गीत गाने का सुझाव दिया था लेकिन ऐसा करने में पिंजरे के पंछी ने अपने आपको मजबूर पाया। उसका कहना था कि बादलों में कहीं बैठने की जगह तो है नहीं, फिर वह कैसे वहाँ गीत गा सकता है।
   (घ) दोनों पंछियों की दशा एकदम विपरीत है। वन का पंछी आज़ाद, मस्त और प्रसन्न है। वह खुले आकाश में उड़ता जंगली गीत गाता है। दूसरी ओर पिंजरे का पंछी पिंजरे में रहने का आदी हो चुका है। पिंजरा ही उसे सुरक्षित और आरामदायक लगने लगा है। वह प्राकृतिक सौंदर्य, आज़ाद उड़ान, जंगली गीत जैसी बातें भूल चुका है।

2. (क) (*ii*), (ख) (*iv*), (ग) (*i*), (घ) (*ii*), (ङ) (*iii*)

3. (क) ये पंक्तियाँ वन के पंछी द्वारा पिंजरे के पंछी को कही गई हैं। उसका कहना है कि गीत गाने के लिए किसी विशेष व्यवस्था की ज़रुरत नहीं है। खुले आकाश में उड़ो, बादलों के पास पहुँचो और खूब जंगली गीत गाओ।
   (ख) यह पंक्ति पिंजरे के पंछी द्वारा वन के पंछी को कही गई है। वन का पंछी उसे खुले आकाश में उड़ने तथा जंगली गीत गाने का निमंत्रण देता है। पिंजरे का पंछी न जाने कब से पिंजरे में कैद है। वह अपनी प्राकृतिक उड़ान भूल चुका है। अब तो उसे लगने लगा है कि उसमें उड़ने की शक्ति ही नहीं है।

4. **संकेत :** लंबे समय से पिंजरे में कैद था, काफ़ी समय से उड़ा नहीं था, जब कोई प्राणी किसी काम को लंबे समय तक नहीं करता तो उस काम पर उसकी पकड़ ढीली हो जाती है, यदि कोई दो-चार साल तक चले ही नहीं तो उसकी टाँगे बेकार हो सकती हैं, यदि कोई दो-चार साल बिस्तर से ही न उठे तो हो सकता है उसकी रीढ़ बेकार हो जाए और यदि बेकार न भी हो तो उसे लगने लगेगा कि अब वह

उठ नहीं सकता, यही नियम पिंजरे के पंछी पर भी लागू हुआ होगा।

संकेत : वनपाखी प्राकृतिक सौंदर्य, आज़ादी, खुशी, मस्ती तथा कार्यशीलता का प्रतीक; पिंजरे का पंछी गुलामी, उदासी, शोक तथा आलस का प्रतीक।

भाषा-बोध

1. (*i*) अपने-आपको, (*ii*) बैठा-बैठा, (*iii*) रटी-रटाई, (*iv*) एक-दूसरे, (*v*) पास-पास, (*vi*) अलग-अलग
2. (क) न तो रोहन मानता है, न ही रोहित।
   (ख) न तो यश नाचता है, न ही मोना।
   (ग) न तो मैं जाता हूँ, न ही तुम।
   (घ) न मैं पैसे देता हूँ, न शिखा चीज़ लेती है।
3. वन– जंगल, अभ्यारण्य; मिलन– मेल, योग; सोना– स्वर्ण, कुंदन; आकाश– नभ, अंबर; पंख– पर; शक्ति– ताकत, बल
4. (ख) आओ, (ग) निकलूँगा, (घ) दोहरा रहा था, (ङ) बंद कर दी जाए

रचनात्मक कार्य

1. **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत :** किसी कार्य का पूरा होना शारीरिक शक्ति की तुलना में मानसिक शक्ति पर अधिक निर्भर; जो यह सोचता है, 'हाँ, मैं कर सकता हूँ' वह सफल हो जाता है; जो यह सोचता रहता है, 'पता नहीं कर पाऊँगा या नहीं,' 'शायद मुझसे होगा नहीं' वह करने से पहले ही आधा असफल हो जाता है; वह पूरे मन से, पूरी शक्ति से काम ही नहीं कर पाता; जिसके मन में पूरा विश्वास होता है वह पूरी शक्ति से, पूरी लगन से काम में जुट जाता है और सफल होकर ही रहता है।
2. **संकेत :** देश कभी आज़ाद न हो पाता, न ही कोई इन महान नेताओं के बारे में कोई कुछ जान सकता और न ही उनके महान कार्यों से प्रेरणा ग्रहण कर पाता।

3.4.5. कार्य-कलाप पूर्ण करने हेतु विद्यार्थियों का उचित मार्ग-दर्शन करें।

14. प्रायश्चित्त

मौखिक

(क) रामू की बहू को पूरा स्नेह, प्यार और इज़्ज़त मिली।

(ख) कभी भंडार-घर खुला रह जाता था, तो कभी भंडार-घर में बैठे-बैठे सो जाती थी। वह जो भी खाने-पीने की चीज़ रखती थी बिल्ली चट कर जाती थी।

(ग) बिल्ली फँसाने का कटघरा आया और उसमें दूध, मलाई, चूहे और बिल्ली को स्वादिष्ट लगने वाले विविध प्रकार के व्यंजन रखे गए।

(घ) जब कबरी बिल्ली सारी खीर चट्ट कर गई।

(ङ) पड़ोसियों का रामू के घर ताँता लग गया और प्रश्नों की बौछार शुरू हो गई।

लिखित

1. (क) कबरी बिल्ली की हरकतों के कारण रामू की बहू का जीना दुश्वार हो गया था।
   (ख) कबरी का हौसला बढ़ने से बहू को घर में रहना मुश्किल हो गया। उसी के कारण उसे सास की झिड़कियाँ सुननी पड़ती थीं।
   (ग) मिसरानी ने घोषणा की कि जब तक बहू के सिर हत्या का पाप रहेगा, वह रसोई में खाना नहीं बनाएगी।
   (घ) यह समाचार सुनकर पंडित जी मन ही मन प्रसन्न हुए और उन्होंने पंडिताइन को खाना बनाने से मना कर दिया।
   (ङ) पूजा की सामग्री में शामिल चीज़ें थीं–दस मन गेहूँ, एक मन चावल, एक मन तिल, पाँच मन जौ, पाँच मन चना, चार पंसेरी घी और एक मन नमक।
2. (क) पंडित परमसुख चौबे छोटे कद के मोटे-से आदमी थे। उनका कद मात्र चार फ़ीट दस इंच (लगभग 147 से०मी०) था जबकि उनकी कमर 58 इंच थी (आम स्वस्थ व्यक्ति की कमर 36 इंच होती है। उनका रंग गोरा चेहरा गोल-मटोल, बड़ी-बड़ी मूँछें और कमर तक लंबी चोटी थी। उनकी एक समय की खुराक पूरी एक पंसेरी (पाँच सेर) थी।
   (ख) पंडित जी ने बताया कि बिल्ली की हत्या का पाप उतारने के लिए सोने की एक बिल्ली दान की जाए। यह कम-से कम इक्कीस तोले की होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त इक्कीस दिन पूजा-पाठ होगा। पूजा की सामग्री भी पंडित जी के घर भेजनी होगी। इन इक्कीस दिनों में दोनों समय पाँच-पाँच ब्राह्मणों को भोजन करवाना होगा।
   (ग) रामू की माँ को पंडित जी की बातें कुछ जँच नहीं रही थीं। उन्हें लग रहा था कि उन्हें ठगा जा रहा है लेकिन घर में जमा हुई मोहल्ले की औरतें उन पर दबाव डाल रही थीं। इसके अतिरिक्त पंडित जी ने उन्हें डराया कि उनकी बहू कुंभीपाक नरक भोगेगी। इन सब बातों के चलते रामू की माँ को पंडित जी की बातें माननी पड़ीं।

(घ) रामू की बहू चौदह वर्ष की भोली बालिका थी। वह मासूम तो थी ही, अभी घरेलू ज़िम्मेदारियों से काफ़ी-कुछ अनजान थी लेकिन वह घर-परिवार की सेवा करने को तत्पर थी। इसके अतिरिक्त वह आज्ञाकारिणी और बड़ों का सम्मान करने वाली लड़की थी।

3. (क) (*iii*), (ख) (*iii*), (ग) (*i*), (घ) (*iii*)

4. (क) हिंदू समाज में कुछ धार्मिक नियमों का पालन किया जाता है। कभी-कभार, जाने-अनजाने इन नियमों का उल्लंघन हो जाता है। तब कुछ स्वार्थी पंडित आम हिंदू को कई प्रकार से डरा देते हैं। वे उसे नरक का डर भी दिखाते हैं। फिर वे उसे नरक से बचने का उपाय बताने को भी तत्पर रहते हैं। बस इसी उपाय के बहाने वे अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेते हैं। ऐसे ही एक पंडित ने यह कथन कहा था।

(ख) रामू की माँ पंडित परमसुख के चँगुल में फँस चुकी थी। वह बुरी तरह डर गई थी। वह नहीं चाहती थी कि उसकी बहू को किसी प्रकार का कष्ट हो। न चाहते हुए भी वह पंडित जी की सभी बातें मान लेती है। यह कथन उसकी मजबूरी को दर्शाता है। वह कहना चाहती है– अब तो जो कहोगे, करना ही पड़ेगा।

5. **संकेत :** उपाय अनेक हो सकते हैं (बिल्ली को पकड़वाना, घर में कुत्ता पालना, कड़वी खीर खिलाना आदि); फिर भी अधिकतम बच्चों के निजी उपाय अवश्य लिखवाएँ।

संकेत : मन टूट गया होगा, सारी काल्पनिक खुशी जाती रही होगी, जो सपने देखे थे–पकवान मिलेंगे, सोना मिलेगा, ढेर-सी सामग्री मिलेगी-वे सपने ही रह गए होंगे, शायद बिल्ली को या सूचना देने वाली महरी को मन-ही-मन भला-बुरा कहा होगा।

भाषा-बोध

1. **सरल वाक्य :** उधर कबरी ने सरगर्मी दिखाई।
संयुक्त वाक्य : मोरचाबंदी हो गई और दोनों सतर्क।
मिश्र वाक्य : रामू की बहू ने तै कर लिया कि या तो घर में वही रहेगी या फिर कबरी बिल्ली ही। [इन्हीं प्रकार के कई अन्य वाक्य भी पाठ में हो सकते हैं।]

2. प्रेम – प्रेमी, प्रेमिका, प्रेमपूर्ण, प्रेमपूर्वक
घृणा – घृणित, घृणापूर्ण, घृणापूर्वक, घृणास्पद
फूल – फुलवारी, फूलदान, फूलदार, फूलवाला
पाठ – पठित, अपठित, पाठशाला, पाठमाला

3. महरी, मिसरानी, बालाई, सफाचट, रबड़ी, कटोरी।

4. मुँह मोड़ना – कन्नी काटना
चंपत होना – नौ दो ग्यारह होना
छक्के पंजे होना – पाँचों उँगलियाँ घी में होना
खून स्वार होना – मारने को दौड़ना

5. (क) **नौकरानियों** पर उसका हुक्म चलने लगा।
(ख) **पंडिताइन जी** खाना खा रही थीं।
(ग) उधर कमरे में **बिलाव** आया।
(घ) धन्नू के **दादा** भी बोले।

6. (*i*) कठिन, (*ii*) आदेश, (*iii*) अनुमान, (*iv*) बचत, (*v*) उत्साह, (*vi*) समाचार

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** बाल-विवाह निषेध कानून को सख्ती से लागू करना, बाल-विवाह के विरुद्ध लोगों को जागरूक करना, स्त्री-शिक्षा को बढ़ावा देना।

2. **संकेत :** ऐसी प्रथाओं का विरोध करना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना, शिक्षा का प्रचार-प्रसार करना।

3. **संकेत :** समझाया-बुझाया जाना चाहिए, उसे वैज्ञानिक समझ तथा आधुनिक दृष्टिकोण देना चाहिए।

4. बच्चों को प्रोत्साहित करें कि वे घर में बड़ों से चर्चा कर पाएँ। इससे न केवल बच्चों का ज्ञान बढ़ेगा वरन बड़े भी अपने पुराने समय को याद कर रोमांचित होंगे।

5. **संकेत :** मिलिमीटर, सेंटीमीटर, मीटर, किलोमीटर, इंच, फीट, मिलिग्राम, ग्राम, किलोग्राम, क्विंटल, टन आदि।

15. बस की यात्रा

मौखिक

(क) वह बूढ़ी बस को आगे-पीछे चारों तरफ से देखने लगे कि यह अपने गंतव्य तक पहुँचा भी देगी या नहीं।

(ख) डॉक्टर मित्र ने सबको दिलासा दिया कि यह बस आराम से लेकर चलेगी। बल्कि नई बसों से यह बस ज़्यादा अच्छी चलती है।

(ग) जैसे अंतिम विदा दे रहे हों।

(घ) लेखक और उनके मित्रों को ग्लानि हो रही थी कि उन्हें इस बूढ़ी अर्थात इतनी पुरानी बस में बैठकर नहीं आना चाहिए था।

(ङ) बस की बत्ती गुल हो जाने पर वह चाँदनी की मदद से आगे बढ़ रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह किनारे खड़ी हो जाती थी।

लिखित

1. (क) बस बहुत पुरानी थी, उसकी हालत बुजुर्गों जैसी

थी इसलिए लेखक के मन में श्रद्धा उमड़ पड़ी।

(ख) बस की खिड़की में टूटे-फूटे काँच थे। उनसे बचने के लिए सभी मित्र खिड़की से दूर खिसक गए।

(ग) बस के चलते ही लेखक को गांधी जी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों की याद आई।

(घ) बाल्टी में पेट्रोल देखकर लेखक को उम्मीद होने लगी कि थोड़ी ही देर में बस-कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे। फिर वे उसे ऐसे पेट्रोल पिलाएँगे जैसे माँ बच्चे को बोतल से दूध पिलाती है।

2. (क) बस एक यूनिट की भाँति काम नहीं कर रही थी। उसका हर हिस्सा दूसरे हिस्से से असहयोग कर रहा था। कभी लगता था कि सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है। कभी लगता था कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है इसलिए लेखक को लगा कि बस को अवज्ञा आंदोलन की पूरी ट्रेनिंग मिल चुकी थी।

(ख) प्राकृतिक दृश्य देखकर लेखक बेचैन हो रहा था। उसे हर पेड़ एक शत्रु जैसा दिखाई दे रहा था। उसे लग रहा था कि बस किसी-न-किसी पेड़ से जरूर टकराएगी। कोई झील नज़र आती तो वह सोचता कि बस इसमें गिरकर डूब जाएगी।

(ग) लेखक बस-कंपनी में हिस्सेदार व्यक्ति को बहुत साहसी और क्रांतिकारी मानते हैं। उनका कहना है कि इस हिस्सेदार को बस के टायरों की हालत का पता है। फिर भी वे इसी बस में यात्रा कर रहे हैं। उनकी बलिदान की भावना को देखकर लेखक ने उनकी ओर श्रद्धाभाव से देखा।

(घ) लेखक को एक निश्चित समय पर पन्ना पहुँचना था लेकिन अब यह असंभव था। जब कोई उद्देश्य ही न रहा तो वे निश्चिंत हो गए। निश्चिंत हुए तो तनाव-मुक्त भी हो गए।

3. (क) (*i*), (ख) (*iii*), (ग) (*iv*), (घ) (*ii*)

4. यह कथन लेखक ने बस की हालत देखने के बाद कहा। बस की हालत अत्यंत खराब थी। टायर पुराने थे। खिड़कियों के शीशे टूटे हुए थे। इंजन की हालत अच्छी न थी इसलिए जब बस-कंपनी के हिस्सेदार ने कहा कि बस अभी चलेगी तो लेखक ने हैरानी से यह बात कही।

5. **संकेत :** मैं चालीस साल पुरानी बस हूँ; मेरे टायर घिस चुके हैं; खिड़कियों के शीशे टूट चुके हैं; इंजन हवाई जहाज़ से भी ज़्यादा शोर करता है; लाइट का कोई भरोसा नहीं; सीट कब उखड़ जाए, पता नहीं; अपने मालिकों के लालच के कारण इस बुढ़ापे में भी सवारियों का बोझ ढो रही हूँ, सवारियाँ भी मुझसे तंग हैं; लेकिन हम सबकी सुने कौन; भगवान बस-कंपनी के मालिकों को सद्बुद्धि दे।

भाषा-बोध

1. (*i*) ऐसा, **जैसे** सारी बस इंजन ही है।
   (*ii*) हमें लग रहा था **कि** हमारी सीट के नीचे इंजन है।
   (*iii*) मर गया, **पर** टायर नहीं बदला।
   (*iv*) लगता था, ज़िंदगी इसी बस में गुज़ारनी है **और** इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है।

2. (*i*) धोबिन, (*ii*) कुम्हारिन, (*iii*) सुनारिन, (*iv*) लुहारिन, (*v*) तेलिन, (*vi*) नातिन, (*vii*) जुलाहिन, (*viii*) पड़ोसिन, (*ix*) बाघिन, (*x*) नागिन

3. (*i*) चलती क्यों नहीं है जी! (हर्षयुक्त आश्चर्य का भाव)
   (*ii*) गज़ब हो गया! (हैरानी का भाव)

4. (*i*) पर + अधीन, (*ii*) नियम + अनुसार, (*iii*) स्व + अधीन, (*iv*) धर्म + अंध, (*v*) धर्म + अर्थ

5. (क) गैर हाज़िर, (ख) अविनय, (ग) प्रारंभिक, (घ) बेवकूफ़, (ङ) दुरुपयोग

रचनात्मक कार्य

1. **असहयोग आंदोलन :** सितंबर 1920 में गांधी जी द्वारा किसानों- मज़दूरों के समर्थन में चलाया गया, किसानों ने सरकार को लगान देने से इंकार कर दिया, प्रिंस ऑफ़ वेल्स का बहिष्कार किया गया, फरवरी 1922 में आंदोलन वापस ले लिया गया क्योंकि यह आंदोलन हिंसक हो गया था।

   सविनय अवज्ञा आंदोलन : यह 6 अप्रैल, 1930 को छेड़ा गया क्योंकि अंग्रेज़ सरकार ने नमक पर कर लगा दिया था, इसमें विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया, विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई, गांधी जी ने डाँडी यात्रा की और नमक कानून भंग किया।

2.3.4.हेतु विद्यार्थियों का उचित मार्ग-दर्शन करें।

16. खतरनाक शिकार

मौखिक

(क) क्योंकि बाघिन हिरन के पीछे भाग रही थी।

(ख) इससे पहले कि लेखक बाघ पर वार करता बाघ उछलकर लेखक के घोड़े की पीठ पर आ बैठा और एक पंजा दाएँ कंधे में गाड़ दिया।

(ग) क्योंकि बाघ के तेज़ नाखून घोड़े की पीठ में गड़े हुए थे।

(घ) लेखक को कंधे में असहनीय पीड़ा हो रही थी। डर भी लग रहा था कि जब घोड़ा भागते-भागते थक जाएगा तब उसे बाघ का भोजन बनना पड़ेगा।

(ङ) लेखक के साथी उन्हें खोजकर अपने घर तक ले आए थे।

लिखित

1. (क) नर-बाघ को देखकर लेखक को समझ आया कि नर के आकर्षण से ही बाघिन ने हिरण का पीछा छोड़ा था।

   (ख) लेखक ने बाघ को उसकी साथिन से जुदा कर दिया था इसलिए बाघ में बदले की भावना जागृत हो गई थी।

   (ग) लेखक घोड़े की पीठ पर जमा रहा और लगाम को कसकर थामे रहा। इसी को उन्होंने 'दैव की गति' माना।

   (घ) घोड़ा दबाते ही लेखक का सीधा (दायाँ) कान सुन्न पड़ गया और उन्हें ऐसा लगा जैसे उनके बाल झुलस गए हों।

2. (क) लेखक अपने साथियों के साथ जंगल में सूअर का शिकार खेलने गए। एक भंयकर सूअर का पीछा करते-करते वे एक गहरी घाटी में जा पहुँचे। वहाँ से लौटते समय उन्होंने एक बाघिन को झाड़ी से निकलते हुए देखा। उस समय यह बाघिन एक हिरण का पीछा कर रही थी।

   (ख) बाघिन एक झाड़ी की ओर जा रही थी। लेखक ने उस झाड़ी के पास पहुँचकर बाघिन पर रायफल से गोली चला दी। गोली खाकर वह तीन-चार बार उलट-पुलट लुढ़की और झाड़ी की ओर चली गई। लेखक ने आगे बढ़कर एक गोली और चलाई। बाघिन गरजी, खड़े होने की कोशिश की लेकिन गिरकर मर गई।

   (ग) लेखक की एकमात्र आशा थी—उनका तमंचा। उस हालत में वे केवल तमंचे का ही प्रयोग कर सकते थे। यह आशा अचूक इसलिए नहीं थी क्योंकि उन्हें तमंचे का प्रयोग केवल अनुमान से ही करना था। वे घोड़े पर सवार थे। उनका मुँह आगे की ओर था और उन्हें गोली पीछे की ओर चलानी थी, वह भी बिना देखे।

   (घ) लेखक ने अनुमान से बाघ पर गोली चलाई थी। गोली बाघ के माथे में लगी। उसने ऐसी भयंकर गर्जना की कि तमंचे की आवाज़ भी दब गई। गोली खाकर बाघ नीचे जा गिरा और अंतिम साँस लेने लगा।

3. (क) (*i*), (ख) (*iii*), (ग) (*iii*), (घ) (*iv*)

4. यह दृश्य दिल की धड़कन को बढ़ाने वाला है। लेखक घोड़े पर सवार है। उनके पीछे (घोड़े पर) बाघ बैठा है। बाघ के नाखून लेखक के कंधे और घोड़े की पीठ में गड़े हैं। घोड़ा पहले ही बहुत थका हुआ है और भयंकर पीड़ा झेल रहा है। तब लेखक यह सोचकर काँप उठे कि जब उनका घोड़ा (पूरा) थक जाएगा, तब क्या होगा।

5. **संकेत :** जानवरों के स्वभाव की जानकारी, जंगल के नक्शे की जानकारी, जानवरों के ठिकानों की जानकारी, मौजूद हथियार चलाने की जानकारी, पेड़ पर चढ़ने की कला, प्राथमिक चिकित्सा का ज्ञान।

भाषा-बोध

1. (क) जो, वह; (ख) जैसा, वैसा; (ग) जो, सो; (घ) जो, उसे; (ङ) जिसे, वह

2. (क) बिलकुल, (ख) बहुत, (ग) तेज़, (घ) मज़बूत, (ङ) अधिक

3. (क) कि, (ख) ताकि, (ग) इसलिए, (घ) या, (ङ) परंतु

4. भाग – इस तरबूज़ के चार भाग करो।
   पुलिस ने पीछा किया तो चोर भाग गया।
   बगल – हमारे स्कूल की बगल में डाकघर है।
   उसने छतरी बगल में दबा रखी थी।
   भाव – आजकल बादाम का क्या भाव है?
   इस कविता का भाव बहुत सुंदर है।

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** पूर्णत अनुचित, मनोरंजन का अर्थ—दिल बहलाना, दिल का बहलाव ऐसा नहीं होना चाहिए कि किसी निर्दोष को प्राण गँवाने पड़ें, मनोरंजन हेतु और अनेक साधन उपलब्ध हैं, आजकल तो साहसिक खेल भी एक से बढ़कर एक और अत्यंत रोमांचक हैं।

2. **संकेत :** शिकार पर पाबंदी, सुरक्षित अभ्यारण्यों का विस्तार, जंगली जानवरों की उचित देखभाल एवं गिनती।

3. **संकेत :** जीवन बचाए रखने के उपाय करना, संभव हो तो खुले मैदान में पहुँचकर आग जलाना, किसी लंबी लाठी पर अपनी कमीज़ आदि टाँगकर रखना, यदि कोई हैलीकॉप्टर या विमान ऊपर से गुज़रे तो कमीज़ टँगी लागी को ज़ोर-ज़ोर से दाएँ-बाएँ लहराना/झुलाना।

4. **संकेत :** देश में बाघों के लिए अनेक संरक्षित पार्क, उनमें से प्रमुख हैं—पेरियार राष्ट्रीय पार्क (केरल), काज़ीरंगा राष्ट्रीय पार्क (आसाम), सरिस्का बाघ रिज़र्व (राजस्थान), दुधवा बाघ रिज़र्व (मध्य प्रदेश),

मेलघाट बाघ रिज़र्व (महाराष्ट्र), इंदिरावती बाघ रिज़र्व (छतीसगढ़), वाल्मिकी बाघ रिज़र्व (बिहार), श्री साइलम बाघ रिज़र्व (आंध्र प्रदेश)

17. दोहे

मौखिक

(क) इस पंक्ति के माध्यम से कबीर यह समझाना चाहते हैं कि तलवार का मोल तो लगाया जा सकता है परन्तु जिस म्यान में तलवार रहती है उस म्यान का नहीं अर्थात यदि साधु-संत कोई ज्ञान की बात बता रहे हैं तो उसे ग्रहण कर लेना चाहिए बजाए कि यह पूछना कि साधु की जात क्या है।

(ख) उपकारी के संग रहने से सुख की प्राप्ति होती है और उपकार करना भी सीख जाते हैं। ठीक उसी प्रकार जैसे मेंहदी बाटने वाले के हाथ में मेंहदी लग जाती है और उसका हाथ रंग जाता है।

(ग) हमें आशा उसी से करनी चाहिए जो भविष्य में हमारे काम आ सके। जिस प्रकार रेतीले या सूखे सरोवर से प्यास नहीं बुझ सकती उसी प्रकार कंजूस व्यक्ति से कुछ प्राप्त नहीं हो सकता।

(घ) तुलसीदास जी ने कहा है कि जहाँ धर्म है वहीं दया का भाव है। जहाँ अभिमान अर्थात घमंड होता है वहाँ व्यक्ति सिर्फ पाप और अधर्म करता है। जब तक हमारे शरीर में प्राण हैं हमें दया का भाव नहीं छोड़ना चाहिए।

लिखित

1. (क) सोच-विचार के बाद ही शब्द मुख से निकलने चाहिए।
   (ख) हमें अपने सब कार्य एक-एक कर पूरे करने चाहिए।
   (ग) सपूत की पहचान यह होती है कि उसके लक्षय बचपन में ही नज़र आ जाते हैं।
   (घ) उत्तम विद्या ही उत्तम जीवन बनाती है, इसलिए ऐसा कहा गया है।
2. (क) (*iii*), (ख) (*i*), (ग) (*iv*), (घ) (*ii*)
3. (क) दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
   तुलसी दया न छाँड़िए, जब लग घट में प्रान।
   (ख) एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
   रहिमन मूलहि सींचिबो, फूलै, फलै अघाय।
4. **संकेत :** एक समय में एक ही कार्य करना उत्तम, यदि एक समय में एक ही कार्य किया जाए तो हमारा पूरा ध्यान पूरी शक्ति उसी कार्य को करने में लगेगी, यदि एक समय में अनेक कार्य करने की कोशिश की जाए तो कोई भी काम उत्तम श्रेणी का नहीं होगा, बौखलाहट होगी, काम पूरे नहीं होंगे, पूरे हो भी गए तो उनमें निपुणता नहीं होगी, सुंदरता नहीं होगी, परिणाम होगा–तनाव, चिंता, बेचैनी। यदि बात समस्याओं पर लागू होती है, यदि कई समस्याओं पर एक साथ विचार किया तो कोई भी हल नहीं होगी, उलटे वे और गहरी और तनाव देने वाली हो जाएँगी।

भाषा-बोध

1. होनहार बिरवान के, होत चीकने पात–महान वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु ने 13 वर्ष की आयु में कॉलेज में प्रवेश पा लिया था। ऐसे ही लोगों के लिए कहा गया है–होनहार बिरवान के, होत चीकने पात।

   रीते सरवर पर गये, कैसे बुझत प्यास–जिनसे तुम ज्ञान पाने इतनी दूर गए, उन्हें खुद कोई ज्ञान नहीं, वे तुम्हें क्या ज्ञान देंगे। कहते हैं न रीते सरवर पर गये, कैसे बुझत प्यास।

   पइयौ अपावन ठौर में, कंचन तजत न कोय–अच्छी शिक्षा जहाँ से भी मिले, ग्रहण कर लेनी चाहिए। तुमने सुना नहीं–परयौ अपावन ठौर में, कंचन तजत न कोय।

2.

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
चीकने	पात	अपावन	ठौर
रीता	सरोवर	उत्तम	विद्या
होनहार	पूत		

3. (*i*) तलवार, (*ii*) होता है, (*iii*) बाहर, (*iv*) लगे, (*v*) एक, (*vi*) शुभ, (*vii*) जाए, (*viii*) लक्षण, (*ix*) सींचिए, (*x*) छोड़िए, (*xi*) प्राण, (*xii*) यद्यपि
4. (*i*) सहर्ष, (*ii*) सविनय, (*iii*) सपरिवार, (*iv*) सदय, (*v*) सहृदय

रचनात्मक कार्य

1. **संकेत :** रावण के अंतिम समय में श्रीराम ने रावण से शिक्षा ग्रहण की थी, कारण–रावण अनुभवी विद्वान था, उसे अनेक विद्याओं का ज्ञान था, जीवन में क्या करना चाहिए और क्या नहीं इसका उसे पूरा ज्ञान था।
2. **संकेत :** स्वामी विवेकानंद, बचपन में साथियों संग बाग में खेल रहे थे, बच्चों ने डराया–उस पेड़ के पास मत जाना, उस पेड़ पर भूत रहता है, नज़दीक जाना तो दूर स्वामी जी उस पेड़ पर जा बैठे, बच्चों के मन में संदेह दूर किया–कोई भूत-वूत नहीं होता, ये सब मन के वहम (भ्रम) होते हैं।
3. **संकेत :** महात्मा बुद्ध के बचपन की घटना, उनके चचेरे भाई देवदत्त ने तीर मारकर निर्दोष हंस को घायल कर दिया था, सिद्धार्थ (बुद्ध) ने उसे बचाया, दोनों

हंस पर अपना अधिकार जताने लगे, खुला छोड़ने पर हंस सिद्धार्थ की ओर गया, देवदत्त को उसने देखना भी उचित नहीं समझा।

4. **संकेत :** रावण, कंस, हिरण्यकश्यप

5. बच्चों का मार्ग-दर्शन करें।

मॉडल प्रश्न पत्र – I

1. (क) कवि ने बादलों की विशेषता बताई है–बादलों का गरजना, बिजली का कड़कना और उनसे वर्षा होना।
   (ख) जो वरदान बाली को प्राप्त था, वही वरदान हमें भी प्राप्त है।
   (ग) शिकारी के भय से शतुरमुर्ग अपनी गरदन छुपा लेता है।
   (घ) कमला जी ने अस्पताल 'स्वराज्य भवन' के एक हिस्से में बनवाया।

2. (क) डिप्टी मजिस्ट्रेट ने अपने निर्णय में लिखा कि पंडित अलोपीदीन के विरुद्ध दिए गए प्रमाण आधारहीन और भ्रम पैदा करने वाले हैं। उन्होंने यह भी लिखा कि यह स्थिति वंशीधर की विचार-हीनता से पैदा हुई है। उसके कारण एक भले व्यक्ति को कष्ट उठाना पड़ा है।
   (ख) निश्चित तौर पर नेता जी में अटूट आत्मविश्वास था। एक बार एक परीक्षक ने उनसे बड़ा अजीब-सा प्रश्न पूछा। उसने पूछा कि क्या किसी अँगूठी में से उन्हें (नेता जी को) पास किया जा सकता है। कोई आम व्यक्ति इस प्रश्न पर भ्रम में पड़ जाता लेकिन नेता जी ने अपने नाम का विज़िटिंग कार्ड मोड़कर उस अँगूठी में से पास करवा दिया। यह अटूट आत्मविश्वास का ही प्रतीक था।
   (ग) प्रकाश पेड़-पौधों के जीवन का मूल-मंत्र है। प्रकाश के अभाव में पेड़-पौधों का जीवन असंभव है। सूर्य के प्रकाश की सहायता से ही पेड़ 'अंगारक' वायु से अंगार अलग करते हैं। सूर्य-किरण का स्पर्श पाकर ही पेड़ फलता-फूलता है।

3. (क) (*ii*), (ख) (*iii*), (ग) (*i*), (घ) (*ii*), (ङ) (*iii*)

4. (क) यदि कोई सुबह-शाम मंदिर, मसजिद या गुरुद्वारे, चर्च में तो जाए लेकिन किसी गरीब की सहायता न करे तो उसका जीवन निरा पाखंड हो जाएगा। हर व्यक्ति के भीतर परमात्मा का वास है। सब महापुरुषों ने यही भेद समझाया है। इसीलिए ध्यान को इतना महत्त्व दिया गया है। तभी तो कहा गया है कि मानव-सेवा ही सच्ची ईश्वर-सेवा है।
   (ख) वास्तव में व्यक्ति की असली परीक्षा मुसीबत के समय ही होती है। कुछ लोग मुसीबत के समय टूट जाते हैं और परिस्थितियों से समझौता कर लेते हैं। साहसी व्यक्ति अपने सिद्धांतों पर अटल रहते हैं।
   (ग) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने वर्षा ऋतु का सुंदर वर्णन किया है। तब बादल गरजते हुए आते हैं। उनसे बिजली कड़कती है और वर्षा होती है।
   हम धरती पर प्रकृति के विभिन्न रूप देखते हैं। कवि कहते हैं कि प्रकृति के इन रूपों से ही हमें परमात्मा के अनूठे कृत्यों का पता चलता है।

5. (*i*) लता – ल् + अ + त् + आ
   (*ii*) झील – झ् + ई + ल् + अ
   (*iii*) शोभा – श् + ओ + भ् + आ
   (*iv*) रजनी – र् + अ + ज् + अ + न् + ई

6. (*i*) अमृत, (*ii*) सुयोग, (*iii*) असम्मान, (*iv*) अनुपयुक्त

7. (*i*) स्वदेशी, (*ii*) विवाहित, (*iii*) राजनीतिज्ञ, (*iv*) वकील

8. (*i*) गाँव, (*ii*) मंत्र, (*iii*) बाँधना, (*iv*) जंगल

9. **संकेत :** प्रिय मित्र .... कल ही तुम्हारा पत्र मिला; पढ़कर ज्ञात हुआ कि आजकल तुम्हारी पढ़ाई में मन नहीं लग रहा; मेरा सुझाव–रोज़ाना ध्यान करो; लाभ–एकाग्रता बढ़ती है, व्यर्थ के विचारों में कमी आती है, शरीर स्वस्थ होता है, आँखों की रोशनी बढ़ती है, थकावट नहीं होती या कम हो जाती है, ध्यान हर व्यक्ति को तरोताज़ा करता है, मुफ़्त की चीज़ है; माता-पिता को प्रणाम, चिंकी को स्नेह; तुम्हारा

10. **संकेत :** ईमानदारी अच्छी नीति है– ईमानदार पर सबका विश्वास, सबका स्नेह, सबका सहयोग मिलना; परिणामस्वरूप उन्नति होना; सम्मान बढ़ना; यश मिलना, महान बनना।

आत्मविश्वास–आत्मविश्वासी कुछ भी कर सकता है, निश्चय से कार्य करेगा, साहस का प्रदर्शन करेगा, जिसमें आत्मविश्वास नहीं वह हर कार्य डर-डरकर करेगा, उसका मन कभी एकाग्र नहीं होगा, परिणाम यह होगा कि आत्मविश्वासी को हर कार्य में सफलता मिलेगी, आत्मविश्वासहीन जीवन में पिछड़ता चला जाएगा, आत्मविश्वासी बनो, स्वयं में आत्मविश्वास पैदा करो।

मॉडल प्रश्न पत्र – II

1. (क) उन्हें सब कुछ समान मिलता है।
   (ख) उसने आँगन का पेड़ कुल्हाड़ी से काट गिराया।
   (ग) मिसरानी ने घोषणा की कि जब तक बहू के सिर हत्या का पाप रहेगा, वह रसोई में खाना नहीं बनाएगी।
   (घ) सपूत की पहचान यह होती है कि उसके लक्षण बचपन में ही नज़र आ जाते हैं।

2. (क) स्वामी हरिदास अनुभवी संत थे। उन्होंने अकबर-तानसेन को आपस में इशारे करते देख लिया था। अकबर के इशारे एक सम्राट के समान थे। उन्हीं इशारों से वे अकबर को पहचान गए।
   (ख) ब्रह्मपुत्र में डोंगियाँ चलती हैं, नावें चलती हैं, जलपोत चलते हैं। इनके द्वारा न केवल सवारियों को बल्कि सामान भी ढोया जाता है। इसकी सहायता से सामान को दूर-दूर पहुँचाया जाता है। लोग इसकी धारा में मछलियाँ मारते हैं और रोज़गार प्राप्त करते हैं। इस प्रकार यह स्थानीय लोगों के रोज़गार तथा व्यापार में सहायक है।
   (ग) दोनों पंछियों की दशा एकदम विपरीत है। वन का पंछी आज़ाद, मस्त और प्रसन्न है। वह खुले आकाश में उड़ता जंगली गीत गाता है। दूसरी ओर पिंजरे का पंछी पिंजरे में रहने का आदी हो चुका है। पिंजरा ही उसे सुरक्षित और आरामदायक लगने लगा है। वह प्राकृतिक सौंदर्य, आज़ाद उड़ान, जंगली गीत जैसी बातें भूल चुका है।

3. (क) (*ii*), (ख) (*iv*), (ग) (*iv*), (घ) (*i*), (ङ) (*iii*)

4. (क) यह कथन लेखक ने बस की हालत देखने के बाद कहा। बस की हालत अत्यंत खराब थी। टायर पुराने थे। खिड़कियों के शीशे टूटे हुए थे। इंजन की हालत अच्छी न थी इसलिए जब बस-कंपनी के हिस्सेदार ने कहा कि बस अभी चलेगी तो लेखक ने हैरानी से यह बात कही।
   (ख) हिंदू समाज में कुछ धार्मिक नियमों का पालन किया जाता है। कभी-कभार, जाने-अनजाने इन नियमों का उल्लंघन हो जाता है। तब कुछ स्वार्थी पंडित आम हिंदू को कई प्रकार से डरा देते हैं। वे उसे नरक का डर भी दिखाते हैं। फिर वे उसे नरक से बचने का उपाय बताने को भी तत्पर रहते हैं। बस इसी उपाय के बहाने वे अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेते हैं। ऐसे ही एक पंडित ने यह कथन कहा था।
   (ग) रहीम जी कहते हैं कि जीवन में सद्गुणी के साथ ही रहना चाहिए। ऐसे व्यक्ति के साथ रहने से दूसरों में भी सद्गुणों का विकास होता है। जैसे जो व्यक्ति मेहँदी बाँटता है, उसके हाथों पर भी मेहँदी का रंग चढ़ जाता है।

5. (*i*) देश में आटन, (*ii*) जल में मग्न (डूबा हुआ), (*iii*) देश की भक्ति, (*iv*) लोक में प्रिय

6. (*i*) अध्यापिका, (*ii*) सम्राज्ञी, (*iii*) स्वामिनी, (*iv*) शिष्या

7. (*i*) आओ, (*ii*) निकलूँगा, (*iii*) हो गया, (*iv*) है

8. (*i*) पर + अधीन, (*ii*) धर्म + अर्थ, (*iii*) नियम + अनुसार, (*iv*) प्राण + अंत

9. (*i*) ताकि, (*ii*) इसलिए, (*iii*) या, (*iv*) लेकिन

10. **संकेत :**

कमरा नं० 18
अभिमन्यु हॉस्टल
---------- स्कूल ----------

11.11.20××

पूज्य पिता जी

चरण वंदना

सकुशलता के बाद समाचार... स्कूल का टूर... मुंबई... सब बच्चे जा रहे हैं... मैं भी इच्छुक... कृपया तीन हज़ार रुपए... मेरी तरफ़ से माता जी को चरण-वंदना, माहि को प्यार।

आपका प्रिय पुत्र

....